RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 039
दि. 11.11.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

तिरुपति मंदिर लड्डू घोटाला : 250 करोड़ का 'मिलावटी विश्वास', 68 लाख किलो नकली घी से चढ़ा प्रसाद, पांच साल तक चलता रहा खेल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की आस्था के सबसे बड़े प्रतीकों में गिने जाने वाले तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (TTD) में प्रसाद के रूप में चढ़ाए जाने वाले 'श्रीवारी लड्डू' की पवित्रता पर गहरा दाग लग गया है। सीबीआई की जांच में यह खुलासा हुआ है कि पिछले पांच वर्षों (2019 से 2024) तक मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर को चढ़ाए जाने वाले लड्डू में नकली घी का इस्तेमाल होता रहा। जांच एजेंसी के मुताबिक, उत्तराखंड की भोले बाबा ऑर्गेनिक डेयरी ने मंदिर को 68 लाख किलो मिलावटी घी और मक्खन की सप्लाई की, जिसकी कुल कीमत लगभग 250 करोड़ रुपये है। यह नकली घी असली दूध या मक्खन से नहीं, बल्कि मोनोडाईग्लिसराइड्स, एसिटिक एसिड एस्टर और अन्य रासायनिक पदार्थों को मिलाकर तैयार किया गया था।

सीबीआई की स्पेशल इंवेस्टिगेशन टीम (SIT) ने बताया कि इस पूरे घोटाले का पर्दाफाश आरोपी अजय कुमार सुगंध की गिरफ्तारी के बाद हुआ, जिसने इन रासायनिक पदार्थों की आपूर्ति डेयरी को की थी। यह भी सामने आया कि इस डेयरी ने कभी वास्तविक दूध की खरीदारी नहीं की, बल्कि झूठे रिकॉर्ड बनाकर अपने कारखाने में कृत्रिम घी का उत्पादन किया और उसे 'शुद्ध देशी घी' के रूप में मंदिर को भेजा। जांच में यह भी पाया गया कि जब टीटीडी ने जुलाई 2023 में चार टैंकर घी को रिजेक्ट किया — क्योंकि उसमें पशु वसा की मिलावट पाई गई थी — तब भी भोले बाबा डेयरी ने उस घी को नए लेबल लगाकर दोबारा मंदिर को भेज दिया। इसके लिए उन्होंने दक्षिण भारत में मौजूद अपनी सहायक कंपनियों के नाम का इस्तेमाल किया, जिनमें वैष्णवी डेयरी (तिरुपति), मालगंगा डेयरी (उत्तर प्रदेश) और ए.आर. डेयरी फूड्स (तमिलनाडु) शामिल हैं।

तमिलनाडु के डींडिगुल स्थित ए.आर. डेयरी प्लांट से जब सीबीआई और एफएसएसएआई की संयुक्त टीम ने जांच की, तो पाया गया कि रिजेक्ट घी स्थानीय

स्टोन क्रशिंग यूनिट में भेजा गया था, जो वैष्णवी डेयरी के पास स्थित थी। वहां इस घी को प्रोसेस कर नया लेबल लगाया गया और फिर से तिरुपति मंदिर को सप्लाई कर दिया गया। यही घी मंदिर के लड्डू प्रसाद में उपयोग हुआ, जो करोड़ों श्रद्धालुओं को दिया गया।

सीबीआई ने अपनी रिमांड रिपोर्ट में कहा कि यह केवल एक आर्थिक घोटाला नहीं, बल्कि धार्मिक आस्था और जनविश्वास के साथ धोखाधड़ी है। एजेंसी अब यह जांच कर रही है कि TTD के किन वरिष्ठ अधिकारियों और आपूर्तिकर्ताओं की मिलीभगत इस पूरे नेटवर्क में रही।

इस मामले की गूंज देशभर में सुनाई दी, जिसके बाद इसे सुप्रीम कोर्ट तक ले जाया गया। शीर्ष अदालत ने बीते वर्ष अक्तूबर में टिप्पणी की थी कि "यह मामला करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ा है, इसे राजनीतिक नाटक न बनाया जाए।" अदालत ने इसके बाद एसआईटी जांच के निर्देश दिए थे, जिससे मंदिर प्रबंधन और आपूर्तिकर्ताओं की जवाबदेही तय की जा सके।

विवाद के बाद मंदिर प्रशासन तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (TTD) ने बयान जारी करते हुए कहा कि अब मंदिर में केवल शुद्ध और प्रमाणित घी का ही उपयोग किया जा रहा है और श्रीवारी लड्डू की पवित्रता व दिव्यता अब पूरी तरह बेदाग है। प्रशासन ने कहा कि वे इस पवित्रता को बनाए रखने के लिए आगे भी सख्त कदम उठाते रहेंगे।

मामले की जांच के समानांतर, मंदिर प्रबंधन ने अपने परिसर में अनुशासन भंग करने वाले दो आउटसोर्स कर्मचारियों की सेवा समाप्त कर दी। ये दोनों कर्मचारी — रामास्वामी और सरसम्मा — अलीपिरी के पास मांसाहारी भोजन करते हुए पकड़े गए थे। TTD ने इस मामले की शिकायत पुलिस में दर्ज कराई है। आंध्र प्रदेश चैरिटेबल एंडोमेंट्स एक्ट की धारा 114 के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है।

इस पूरे प्रकरण ने न केवल तिरुपति मंदिर की खाद्य आपूर्ति प्रणाली की पारदर्शिता पर सवाल उठाए हैं, बल्कि श्रद्धालुओं के मन में गहरी चिंता भी पैदा की है। करोड़ों भक्तों की आस्था से जुड़ा यह मामला अब धर्म, व्यवसाय और नैतिकता — तीनों की कसौटी पर परखा जा रहा है।

झारखंड उपचुनाव से पहले घमासान: घाटशिला में वोटिंग से पहले कथित रूप से बंटा पैसा, बीजेपी ने JMM पर लगाया गंभीर आरोप

(जीएनएस)। रांची। झारखंड के घाटशिला विधानसभा उपचुनाव से ठीक पहले सियासी माहौल अचानक गर्मा गया है। मतदान से एक दिन पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सत्ताधारी झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) पर गंभीर आरोप लगाते हुए दावा किया है कि रात के अंधेरे में मतदाताओं के बीच पैसे बांटे जा रहे हैं, ताकि चुनाव को प्रभावित किया जा सके। इस आरोप ने चुनाव आयोग और प्रशासन दोनों के सामने नई चुनौती खड़ी कर दी है।

भाजपा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद आदित्य साहू ने एक वीडियो जारी कर कहा कि घाटशिला में झामुमो के विधायक और स्थानीय नेता लोगों के बीच पैसा बांट रहे हैं। उन्होंने इस घटना को लोकतंत्र की मर्यादा के खिलाफ बताते हुए चुनाव आयोग, उपायुक्त (डीसी) और पुलिस अधीक्षक (एसपी) से तत्काल कार्रवाई की मांग की। साहू ने कहा कि "यह साफ है कि झामुमो को हार का भय सता रहा है। इसलिए अब वह धनबल के जरिए मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है। हम चाहते हैं कि इस मामले में शामिल सभी नेताओं को गिरफ्तार कर घाटशिला से बाहर किया जाए।"

भाजपा नेता ने आगे कहा कि संथाल परगना क्षेत्र के कई झामुमो विधायक अब भी घाटशिला में डेरा डाले हुए हैं और मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि भाजपा कार्यकर्ता इस बार जनता के साथ मिलकर "सत्ताधारी दल को सबक सिखाने" का मन बना चुके हैं।

दरअसल, घाटशिला उपचुनाव पूर्व विधायक

रामदास सोरेन के निधन के बाद हो रहा है। झामुमो ने उनके पुत्र सोमेश चंद्र सोरेन को उम्मीदवार बनाया है, जबकि भाजपा ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन के बेटे बाबूलाल सोरेन को मैदान में उतारा है। इस चुनाव को राज्य की सत्ता समीकरणों के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है, क्योंकि परिणाम यह तय कर सकते हैं कि जनमत झामुमो सरकार के साथ है या उसके खिलाफ। वहीं, झामुमो की ओर से पार्टी महासचिव एवं प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए भाजपा पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि "भाजपा को पहले से पता है कि वह चुनाव हारने वाली है, इसलिए अब झूठे आरोप लगाकर माहौल बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है। घाटशिला की जनता दिशोम गुरु शिबू सोरेन और अपने दिवंगत नेता रामदास सोरेन को श्रद्धांजलि के रूप में झामुमो के उम्मीदवार को ही भारी मतों से जिताने जा रही है।"

भट्टाचार्य ने दावा किया कि झामुमो को अपने उम्मीदवार की जीत पर पूरा भरोसा है। उन्होंने कहा कि "लोग झामुमो की नीतियों, विकास कार्यों और स्थानीय नेतृत्व पर विश्वास करते हैं। इस उपचुनाव में जनता भावनात्मक रूप से पार्टी के साथ है।"

दूसरी ओर, भाजपा का कहना है कि झामुमो-नीत गठबंधन सरकार ने राज्य को "लूट और भ्रष्टाचार की दलदल" में धकेल दिया है। आदित्य साहू ने कहा कि राज्य में स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि "रेत, पत्थर और खनन माफिया" सरकार के संरक्षण में खुलेआम लूट मचा रहे हैं और गरीब जनता की कोई सुनवाई नहीं हो रही।

उन्होंने दावा किया कि झारखंड की जनता अब इस सरकार से पूरी तरह निराश है और घाटशिला का यह उपचुनाव जनता की नाराज़गी को साफ़ तौर पर दिखाएगा। साहू ने कहा, "लोगों ने मन बना लिया है कि इस बार धनबल नहीं, जनबल की जीत होगी।"

घाटशिला में मतदान 11 नवंबर को सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच होगा। चुनाव आयोग ने सुरक्षा बलों की तैनाती बढ़ा दी है ताकि किसी भी तरह की अनियमितता या हिंसा को रोका जा सके। मतगणना 14 नवंबर को होगी, जिसके बाद यह तय होगा कि संथाल परगना की इस महत्वपूर्ण सीट पर किसकी जीत होती है—शिबू सोरेन की विरासत या भाजपा की चुनौती।

दिल्ली में लाल किला के पास कार में भीषण विस्फोट, 8 लोगों की मौत और कई घायल, इलाके में मची अफरातफरी

(जीएनएस)। दिल्ली। राजधानी में सोमवार शाम उस वक्त अफरातफरी मच गई जब ऐतिहासिक लाल किला के पास खड़ी एक कार में अचानक जोरदार धमाका हो गया। यह विस्फोट इतना भीषण था कि पूरे इलाके में दहशत फैल गई। धमाके के तुरंत बाद आसपास खड़ी कई गाड़ियों में आग लग गई, जिससे देखते ही देखते पूरा क्षेत्र धुएं से भर गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, धमाके की आवाज इतनी तेज थी कि कई मीटर दूर खड़ी गाड़ियों की खिड़कियां टूट गईं और आसपास की इमारतों की दीवारों में कंपन महसूस किया गया।

अधिकारियों ने बताया कि हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई है जबकि 7 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। सभी घायलों को पास के एलएनजेपी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां कई की हालत चिंताजनक बताई जा रही है। अस्पताल के अधीक्षक ने मृतकों की संख्या की पुष्टि करते हुए कहा कि घायलों में कुछ की हालत बेहद गंभीर है, जिन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया है। विस्फोट शाम करीब साढ़े छह बजे के आसपास लाल किला मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर 1 के पास

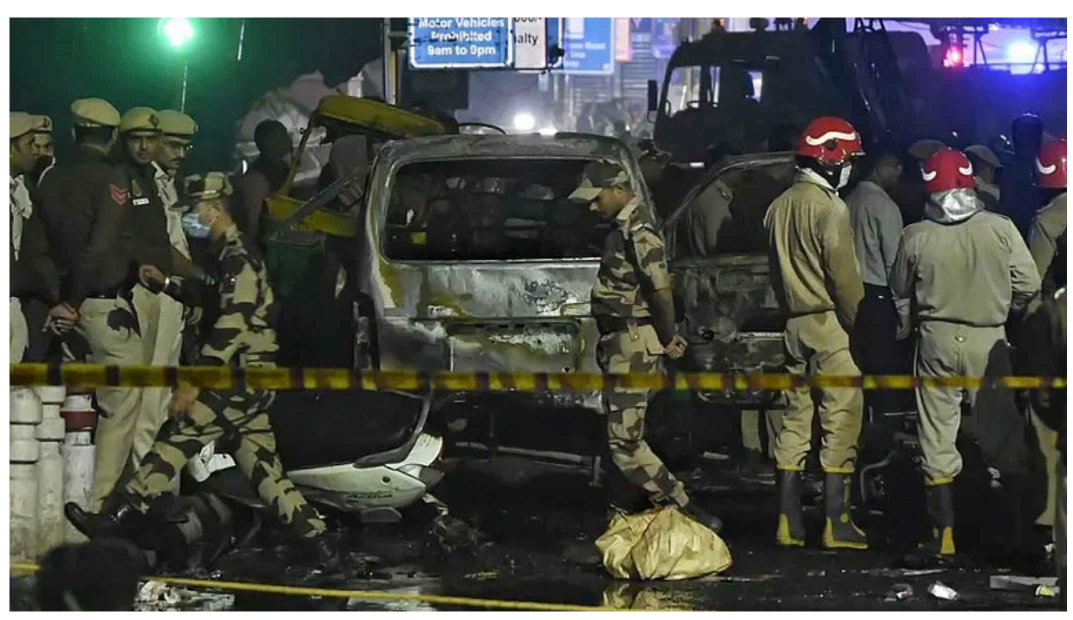

हुआ। चश्मदीदों ने बताया कि जैसे ही धमाका हुआ, आसपास खड़ी कारें और दोपहिया वाहन आग की लपटों में घिर गए। कुछ ही पलों में पूरा इलाका दहशत और चीख-पुकार से भर गया। लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे।

सूचना मिलते ही दमकल विभाग की 15 गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंची और आग पर काबू पाने के प्रयास शुरू किए। पुलिस ने तुरंत इलाके को घेर लिया और पूरा क्षेत्र कॉर्डन ऑफ कर दिया गया। सामान्य वाहनों की आवाजाही रोक दी गई है, जबकि आसपास के बाजारों को भी एहतियातन खाली कराया जा रहा है। दिल्ली पुलिस ने इस घटना के बाद पूरे शहर में हाई अलर्ट जारी कर दिया है। वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और बम निरोधक दस्ते के साथ फॉरेंसिक टीम ने जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच के अनुसार, विस्फोट एक पार्क की गई कार के अंदर हुआ, हालांकि विस्फोट के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि कहीं कार में आईईडी (Improvised Explosive Device) तो नहीं रखी गई थी।

लाल किला इलाका दिल्ली के सबसे व्यस्त और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में से एक है। शाम के समय यहां पर्यटक, स्थानीय लोग और बाजार में खरीदारी करने वाले सैकड़ों लोग मौजूद रहते हैं। ऐसे में आशंका जताई जा रही है कि मृतकों और घायलों की संख्या बढ़ सकती है।

धमाके के बाद दिल्ली के कई हिस्सों में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। मेट्रो स्टेशनों, प्रमुख बाजारों और सरकारी इमारतों के आसपास पुलिस बल की अतिरिक्त तैनाती की गई है। जांच एजेंसियां इस बात का पता लगाने में जुटी हैं कि यह धमाका दुर्घटनावश हुआ या किसी सुनियोजित साजिश का हिस्सा था। इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी घटना पर रिपोर्ट मांगी है। दिल्ली पुलिस कमिश्नर ने कहा है कि "यह गंभीर मामला है। प्रारंभिक जांच जारी है, और किसी भी प्रकार की लापरवाही या सुरक्षा चूक सामने आने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।" लाल किला, जो न सिर्फ दिल्ली बल्कि देश की सुरक्षा और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है, के पास हुए इस धमाके ने एक बार फिर राजधानी की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। रात होते-होते पूरा क्षेत्र पुलिस और जांच एजेंसियों के घेरे में आ गया, वहीं दिल्लीवासियों में डर और चिंता का माहौल बना हुआ है।

ऑपरेशन 'आहट' में बड़ी सफलता: पूर्व रेलवे आरपीएफ ने 45 मानव तस्करों को दबोचा, 108 पीड़ितों को मुक्त कराया

(जीएनएस)। कोलकाता। पूर्व रेलवे के रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने मानव तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान "ऑपरेशन आहट" के तहत बीते दस महीनों में बड़ी सफलता हासिल की है। एक आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार, इस अभियान के दौरान 31 अक्तूबर तक आरपीएफ ने 45 मानव तस्करों को गिरफ्तार किया और चार मंडलों में फैले नेटवर्क से 92 किशोरों सहित कुल 108 लोगों को तस्करों के चंगुल से मुक्त कराया। इस कार्रवाई ने न केवल पूर्वी भारत में सक्रिय मानव तस्करी गिरोहों को करारा झटका दिया है, बल्कि रेलवे सुरक्षा बल की सतर्कता और मानवीय संवेदनशीलता को भी उजागर किया है।

आरपीएफ अधिकारियों ने बताया कि यह अभियान 1 जनवरी से शुरू होकर लगातार जारी है। विशेष टीमों को हावड़ा, सियालदह, आसनसोल और मालदा मंडलों में सक्रिय तस्करी नेटवर्क पर नज़र रखने के लिए तैनात किया गया था। अधिकारियों के अनुसार, मानव तस्कर अक्सर गरीब परिवारों के बच्चों और किशोरों को बहलाकर या नौकरी के लालच में फंसाकर उन्हें बड़े शहरों में जबरन मजदूरी या देह व्यापार में धकेल देते हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह नेटवर्क पूर्वी भारत से दिल्ली, मुंबई और दक्षिण भारत के हिस्सों तक फैल चुका था, जिसे रोकने के लिए आरपीएफ ने रेलवे स्टेशनों और ट्रेनों में गहन निगरानी अभियान चलाया।

पूर्व रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस साल जनवरी से अक्तूबर तक "ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते" के तहत भी बड़ी संख्या में बच्चों को बचाया गया है। इस विशेष अभियान में उन नाबालिगों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है जो अकेले यात्रा कर रहे हों, गुमशुदा हों या जिनकी देखभाल और संरक्षण की जरूरत हो। अधिकारी ने बताया कि अब तक कुल 976 बच्चों को सुरक्षित किया गया है, जिनमें 591 लड़के और 385 लड़कियां शामिल हैं। इन बच्चों को काउंसलिंग और प्राथमिक चिकित्सा के बाद चाइल्ड वेलफेयर कमेटियों को सौंपा गया।

अधिकारियों ने बताया कि आरपीएफ की टीमें लगातार रेलवे स्टेशनों, प्लेटफॉर्मों और ट्रेनों में संदिग्ध गतिविधियों पर नज़र रखती हैं। कई मामलों में यात्रियों की सतर्कता और सूचना देने की तत्परता से भी बच्चों की जान बची है। हावड़ा और सियालदह जैसे बड़े स्टेशनों पर विशेष 'विजिलेंस यूनिट' बनाई गई है, जो मानव तस्करी से जुड़े संदेहास्पद मामलों की तुरंत जांच करती है। इन अभियानों के दौरान कई बार बच्चों को बस टिकट या फर्जी पहचान पत्रों के साथ पकड़ा गया, जिससे पूरे गिरोह का भंडाफोड़ हुआ।

आरपीएफ ने बताया कि गिरफ्तार 45 मानव तस्करों के खिलाफ विस्तृत जांच जारी है। इनमें से कई आरोपी ऐसे गिरोहों से जुड़े हैं जो बिहार, झारखंड, ओडिशा और बंगाल के सीमावर्ती इलाकों में गरीब परिवारों को निशाना बनाते थे। इन तस्करों के पास से मोबाइल फोन, नकली दस्तावेज़, पहचान पत्र और टिकट बुकिंग रिकॉर्ड बरामद किए गए हैं। जांच में यह भी सामने आया है कि कई मामलों में पीड़ितों को काम दिलाने के नाम पर ट्रेनों से दिल्ली या मुंबई भेजा जाता था, जहां उन्हें बंधुआ मजदूरी या अवैध काम में झोंक दिया जाता था।

पूर्व रेलवे के मुख्य सुरक्षा आयुक्त ने कहा कि रेलवे सुरक्षा बल सिर्फ रेलवे संपत्ति की रक्षा नहीं करता, बल्कि मानवता की सुरक्षा भी उसकी प्रमुख जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि "ऑपरेशन आहट" और "ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते" जैसे अभियानों को और सशक्त बनाने के लिए आधुनिक तकनीक, सीसीटीवी मॉनिटरिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)-आधारित ट्रैकिंग सिस्टम को शामिल किया जा रहा है। इससे संदिग्ध गतिविधियों की पहचान तुरंत हो सकेगी।

महिलाएं हैं देश की सबसे बड़ी अल्पसंख्यक, सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से पूछाकब लागू होगा महिला आरक्षण कानून

(जीएनएस)। नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को महिला आरक्षण कानून 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023' के लागू होने में हो रही देरी पर केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। अदालत ने इस सुनवाई के दौरान टिप्पणी की कि भारत में महिलाएं वास्तव में सबसे बड़ा "अल्पसंख्यक वर्ग" हैं, जो आबादी का लगभग 48 प्रतिशत हिस्सा होने के बावजूद राजनीतिक प्रतिनिधित्व में अब भी पिछड़ी हुई हैं। न्यायमूर्ति बी. वी. नागरत्ना और न्यायमूर्ति आर. महादेवन की खंडपीठ ने केंद्र को नोटिस जारी करते हुए कहा कि यह कानून केवल संख्या का नहीं, बल्कि समानता और न्याय के संवैधानिक आदर्शों से जुड़ा हुआ प्रश्न है। अदालत ने कहा, "भारत के संविधान की प्रस्तावना में सभी नागरिकों के लिए राजनीतिक और सामाजिक समानता की गारंटी दी गई है। सवाल यह है कि इस देश में सबसे बड़ा अल्पसंख्यक कौन है? महिलाएं — जिनकी आवाज अब भी पर्याप्त रूप से संसद और विधानसभाओं में नहीं सुनी जाती।"

यह टिप्पणी उस समय आई जब मध्य प्रदेश की कांग्रेस नेत्री जया ठाकुर की ओर से अधिवक्ता वरुण ठाकुर ने एक याचिका दाखिल की, जिसमें अनुरोध किया गया कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम को नए परिसीमन (delimitation) की प्रक्रिया का इंतजार किए बिना तुरंत लागू किया जाए। याचिकाकर्ता का तर्क है कि परिसीमन और जनगणना का इंतजार करने से इस कानून का वास्तविक लाभ कई वर्षों तक महिलाओं को नहीं मिल पाएगा। अदालत ने केंद्र सरकार से यह स्पष्ट करने को कहा है कि वह महिला आरक्षण कानून को लागू करने के लिए क्या ठोस कदम उठा रही है, और क्या इसे अगली लोकसभा या विधानसभा चुनावों से पहले लागू किया जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 को सितंबर 2023 में संसद ने भारी बहुमत से पारित किया था। इस कानून के तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रावधान है। लेकिन सरकार ने इसे नए परिसीमन के बाद ही लागू करने की बात कही थी, जो 2026 के बाद होने की संभावना है।

कई सामाजिक संगठनों और महिला अधिकार कार्यकर्ताओं ने सुप्रीम कोर्ट में यह दलील दी है कि इतना लंबा इंतजार करना संविधान में निहित समानता के सिद्धांत का उल्लंघन है। उनका कहना है कि 75 वर्षों बाद भी जब संसद में महिलाओं की संख्या 15 प्रतिशत से कम है, तब 'नारी शक्ति वंदन' को प्रतीक्षा की बेड़ियों में बांधकर रखना न्यायसंगत नहीं।

अब सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में केंद्र से चार सप्ताह के भीतर विस्तृत जवाब दाखिल करने को कहा है। अदालत ने यह भी संकेत दिया कि यदि आवश्यक हुआ, तो इस विषय पर व्यापक जनहित सुनवाई आयोजित की जा सकती है, क्योंकि यह मुद्दा देश की आधी आबादी की राजनीतिक भागीदारी से जुड़ा है — जो लोकतंत्र की आत्मा है।

संपादकीय

महिला सुरक्षा कानूनों का दुरुपयोग

यह धारणा बना ली गई है कि हरियाणा में महिलाओं के खिलाफ ज्यादा अपराध होते रहे हैं। लेकिन हाल ही में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले कथित अपराधों से जुड़े झूठे मामलों में भी यह राज्य सबसे ऊपर है। जो कि एक गंभीर विरोधाभास को दर्शाता है। पुलिस आंकड़ों पर नजर डालें तो हरियाणा में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की लगभग 45 फीसदी शिकायतें झूठी पायी गई। जबकि गुरुग्राम में 2020 से 2024 के बीच चालीस प्रतिशत से अधिक बलात्कार के मामले जांच के बाद रद्द किए गए। निश्चित रूप से इन आंकड़ों से न केवल कानून प्रवर्तन एजेंसियों बल्कि नागरिक समाज को भी चिंतित होना चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि जब मनगढ़ंत शिकायतें सिस्टम में दर्ज की जाती हैं तो ये न केवल पुलिस का समय बर्बाद करती हैं, बल्कि इसके अलावा भी इसके कई तरह के नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। ये उन वास्तविक पीड़ितों की विश्वसनीयता को भी कमजोर करती हैं जो पहले से ही अपने खिलाफ खड़ी व्यवस्था में अपना मामला साबित करने के लिये संघर्ष कर रहे होते हैं। व्यक्तिगत बदला लेने, जबरन आर्थिक वसूली या ब्लैकमेल के लिये कानूनी प्रावधानों का दुरुपयोग दुर्भाग्यपूर्ण है। जैसा कि हाल ही में गुरुग्राम में एक वकील के नेतृत्व वाले गिरोह से जुड़े मामले में खुलासा हुआ। जाहिर है, इस तरह की करतूतें न्याय प्रक्रिया में जनता के विश्वास को कम ही करती हैं।

निस्संदेह, इस सामाजिक विद्रूपता का उत्तर सभी महिलाओं पर अविश्वास करने या उन्हें हिंसा की रिपोर्ट करने से हतोत्साहित करने में नहीं है। हर शिकायत को गंभीरता से लिया ही जाना चाहिए। लेकिन साथ ही जांच पेशवर तरीके से और प्रमाणिक साक्ष्य आधारित होनी चाहिए। इसके अलावा उतना ही महत्वपूर्ण उन लोगों को दंडित करना भी है जो जानबूझकर कानून का दुरुपयोग करते रहे हैं। निश्चित रूप से महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और न्याय की अखंडता परस्पर विरोधी लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि वे पूरी तरह एक-दूसरे पर ही निर्भर भी हैं। लेकिन प्रसंग के आलोक में सबसे बड़ी सामाजिक चिंता यह भी होनी चाहिए कि हरियाणा में लैंगिक संबंध इतने अस्थिर क्यों हो चले हैं कि यहां हिंसा और प्रतिशोध दोनों पनपते हैं? निर्विवाद रूप से शिक्षा, जागरूकता और लैंगिक संवेदनशीलता कमजोर कड़ियां बनी हुई हैं। सच्चा सशक्तीकरण कानूनों के हथियारीकरण से नहीं, बल्कि एक ऐसी संस्कृति से आएगा, जो निष्पक्षता, समानता और आपसी सम्मान को महत्व देती हो। झूठे आरोप न केवल आरोपी को बल्कि मामले की संवेदनशीलता को नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे में महिलाओं को न्याय सिर्फ सच्चाई या विश्वास की कीमत पर नहीं मिल सकेगा। ऐसे मामलों में समाज के जागरूक लोगों और महिला संगठनों को भी आवाज उठानी चाहिए। साथ ही उन लोगों को न्यायिक प्रक्रिया के जरिये दंडित किया जाना चाहिए, जो कानून की आड़ में निहित स्वार्थों को पूरा करना चाहते हैं।

'साड्डे पुत्तर' ज़ोहरान ने झंडे गाड़े

"रोमांचित करने वाले कुछ घंटों के लिए, आधे भारत ने न्यूयार्क के मेयर पद चुनाव में ज़ोहरान की जीत में किसी अपने का अक्स देखा। उनके माता-पिता भारतीय मूल के हैं व परिवार विविधता की मिसाल। लोकतांत्रिक समाजवाद समर्थक ज़ोहरान की जीत सहमति के उस लुप्त होते विचार का प्रतीक है, जिसने विभाजन के बाद के दशकों में भारत को परिभाषित किए रखा।

भारत ने न्यूयॉर्क में ज़ोहरान ममदानी की जीत को 'साड्डे पुत्तर ने झंडे गाड़े' की तरह अपनाया है, मीडिया का जो प्यार अक्सर शाहरुख खान जैसे दिग्गजों के लिए आरक्षित रहता है, वह उसने इस विजय पर उड़ेल दिया। यहां मामला सिर्फ़ उनकी बेबाक मुस्कान या अंगुलियों से बिरयानी खाते हुए वायरल हुई वीडियो का या बेधड़क होकर वामपंथी राजनीति की हिमायत करने (मसलन,फ़लस्तीन मुद्दे पर) भर का नहीं है। पिछले 72 घंटों में, गूगल पर 'लोकतांत्रिक समाजवाद' के बारे में सर्च करने वालों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि हुई है।

ज़ाहिर है, यहां यह बात भी मददगार है कि ज़ोहरान के माता-पिता भारतीय मूल के हैं - अमृतसर की लड़की मीरा नायर, जिन्होंने शिमला के तारा हॉल स्कूल में पढ़ाई की है;उनके पिता, महमूद ममदानी, एक गुजराती खोजा (शिया) मुसलमान हैं—पूर्वी अफ्रीका के तंगानयिका में जन्मे प्रवासी माता-पिता की संतान हैं और युगांडा के कंपाला में पले-बढ़े। नायर-ममदानी परिवार में अंग्रेजी के अलावा पंजाबी, हिंदी/उर्दू, गुजराती और स्वाहिली भाषाएं बोली जाती हैं।

गत हफ्ते की शुरुआत में न्यूयॉर्क में मंच पर उनकी जीत का जश्न मनाते वक्त ममदानी परिवार की विविधता को देखते हुए—जहां ज़ोहरान के साथ उनके माता-पिता के अलावा पत्नी रमा दुवैजी (सीरीयाई मूल की इस लड़की का परिचय ज़ोहरान से एक डेटिंग ऐप पर हुआ था) और निकाह एक साल पहले दुबई में हुआ - यदि आपके मन में विचार आए कि कहीं वे युनाइटेड कलर ऑफ बेनेटॉन के विज्ञापन के विषयवस्तु तो नहीं, तो इसके लिए आपको माफ़ किया जा सकता है!

एक पल के लिए, ट्रम्प के पागलपन के बीच, अमेरिका ने खुद को उबार लिया। 'मुझे अपने पस्त, अपने गरीब...आज़ाद सांस लेने के लिए बेकरार अपने लोग सौंप दो'....स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी की आधारशिला पर अंकित 1883 की एम्मा लाज़रस कविता की पहली पंक्तियां यह कहती हैं। एक बहु-रंगी परिवार ने अमेरिका की द्विध्रुवीय श्वेत-अश्वेत राजनीति पर पार पा लिया और उसे अपना बना लिया (यहां यह मददगार रहा कि न्यूयॉर्क की 40 प्रतिशत आबादी आप्रवासियों की है)।

इसलिए यह दिलचस्प रहा कि बाकी देश की तरह दो हिस्सों में बंटे भारतीय मीडिया ने गत सप्ताह ज़ोहरान ममदानी की जीत को अपनी विजय बना लिया। यह सिर्फ़ 'धूम मचा ले...' गाने को लेकर नहीं, हालांकि इससे भी मदद मिली। यह इस तथ्य को लेकर है कि रोमांचित करने वाले कुछ घंटों के लिए सही, भारत के आधे हिस्से ने ज़ोहरान की जीत में किसी अपने का अक्स देखा।

यह वही आधा हिस्सा है जो जवाहरलाल नेहरू के कालजयी भाषण 'नियति से मिलन' की भावना के साथ पला-बढ़ा है, जिसे ज़ोहरान ने अपने भाषण की शुरुआत में उद्धृत किया है। उसका अब भी मानना है कि न्यूयॉर्क की सोच– ऊर्जावान एवं जीवंत, अव्यवस्थित एवं प्रामाणिक - अभी भी भारत की सोच हो सकती है, थोड़ा-सा यह और थोड़ा सा वह से बनी, अप्रवासियों का स्वागत करने वाली,जब यह अपने घर में सभी धर्मों, जातियों और पंथों के लोगों को समाहित कर लेती है।

दूसरा आधा हिस्सा ज़ोहरान की तीखी आलोचना करने वालों का है क्योंकि वे गुजरात और उसके बाद प्रधानमंत्री मोदी की राजनीति की आलोचना करते हैं, उनका मानना है कि ज़ोहरान हिंदुओं के खिलाफ 'कट्टरता और पक्षपात' को बढ़ावा दे रहे हैं और ये लोग इस्राइल एवं गाजा पर उनके विचारों से पूरी तरह असहमत हैं - ममदानी का मानना है कि इस्राइल गाज़ा में नरसंहार कर रहा है, जबकि भारत ने पीएम मोदी के शासनकाल में इस्राइल के साथ संबंधों को खूब बढ़ावा दिया है। (विडंबना यह है, और शायद इसीलिए इसे विडंबना कहा जाता है कि जिस दिन न्यूयॉर्क ने ममदानी के लिए मतदान किया, उस रोज़ इस्राइली विदेश मंत्री गिदिओन सा'आर भारत में थे)। स्वाभाविक था, मोदी सरकार के किसी भी सदस्य ने ममदानी की जीत पर स्वागत या बधाई नहीं दी। जिस दिन न्यूयॉर्क में मतदान हुआ, उस दिन भाजपा की राज्यसभा सांसद और राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष रेखा शर्मा ने एक्स पर दक्षिणपंथी भावना व्यक्त करते हुए कहा : 'इस मामले में मैं श्री ट्रम्प के साथ हूं। भारतीय मूल के लोगो, वोट देते वक्त दो बार सोचिएगा। ममदानी की मां का भारतीय मूल की होना, उसे भारत का शुभचिंतक नहीं बनाता'।

यह जानना दिलचस्प होगा कि न्यूयॉर्क में बसे प्रवासी भारतीयों में मोदी समर्थकों ने वोट किसको दिया - वे सब जो प्रधानमंत्री के सार्वजनिक कार्यक्रमों में बिन बुलाए पहुंच जाते हैं, क्या वे भी ममदानी के पक्ष में थे या उनके ख़िलाफ़? अगर उन्होंने ममदानी के पक्ष में वोट दिया, तो इससे मोदी सरकार की प्रवासी नीति पर क्या असर पड़ेगा, जिसके साथ वह दशकों से इतनी गहराई से जुड़ी हुई है?

लंबे अर्से बाद, पहली बार, भारतीय मूल का एक अमेरिकी नागरिक शक्तिशाली बनकर अपने देश के सामाजिक-राजनीतिक विभाजन का प्रतिनिधित्व इतने स्पष्ट रूप से करने जा रहा है। घरेलू राजनीति से लेकर विदेश नीति तक, ज़ोहरान की जीत सहमति के उस लुप्त होते विचार का भी प्रतीक है, जिसने विभाजन के बाद के दशकों में भारत को परिभाषित किए रखा - जब आप अपनी मान्यताओं पर कायम रहते हुए भी किसी और की खुशी में भी शामिल होते थे, भले ही आपको उस व्यक्ति से ज़्यादा लगाव न भी हो। इसलिए भारतीय मीडिया द्वारा ममदानी का क्षणिक जश्न मनाना महत्वपूर्ण है। कुछ घंटों के लिए, बिहार चुनावों की ताबड़तोड़ कवरेज और पंजाब विश्वविद्यालय के कायाकल्प पर विवाद के बाद 'धूम मचा ले' ने जगह बनाई, यह बॉलीवुड गाना,जिसके लिए कुछ लोगों का कहना है, एक इंडोनेशियाई पॉप गीत से प्रेरित है - फिल्मी संगीत में खिचड़ी का एक आदर्श उदाहरण, थोड़ा-सा यह और थोड़ा-सा वह डालकर बनी।

यह खिचड़ी वह चीज़ है, जब आप विभिन्न अनाज एक बर्तन में डाल देते हैं और कुछ ऐसा बनकर निकलता है जिसका निराला स्वाद केवल दाल और चावल से कहीं बढ़कर होता है, वह जो आपकी स्वाद इंद्रियों पर छा जाए, वह जो न्यूयॉर्क के स्वाद को भारतीय चटखारे से जोड़ दे– ये दोनों जगहें भोजन कला के लिए जानी जाती हैं।

'साड्डे पुत्तर' ज़ोहरान ने अपने न्यूयॉर्क शहर में झंडा गाड़ दिया है - 34 साल की उम्र में, उसे डर से ज्यादा मतलब भी नहीं। इधर यहां चंडीगढ़ में, जब अखबार आपके हाथों में आया होगा, एक खबर यह भी है कि पंजाब विश्वविद्यालय के छात्रों ने विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली में बदलाव करने के केंद्र सरकार के फैसले को वापस लेने पर मजबूर कर दिया है, यह भय न रहने की प्रतिध्वनि है।

युवा कह रहे हैं -हट जाओ, हम पुरानी व्यवस्था को बदलने जा रहे हैं, उस नई व्यवस्था का रास्ता बना रहे हैं, जो लोकतांत्रिक समाजवादी या सरल शब्दों में लोकतांत्रिक है, हमारा समय आ गया है।

प्रेरणा

जब भगवान बने अपने भक्त के लिए खीर के चोर : प्रेम का अद्भुत प्रसाद

वृंदावन की पावन भूमि पर एक ऐसे संत रहते थे जिनके जीवन का लक्ष्य केवल और केवल प्रभु के प्रेम का अनुभव था। उनका नाम था संत माधवदास। वे न धन के लोभी थे, न नाम के, न यश के। उनका सारा जीवन प्रभु के नाम-स्मरण में बीतता था। वृंदावन की गलियों में उनके चरणों की धूल और होंठों पर "राधे-कृष्णा" का नाम एक साथ गूँजता था। वे किसी से कुछ नहीं मांगते थे, केवल यही कहते — "जिस दिन मेरे प्रभु मुझे अपने दर्शन देंगे, उस दिन जीवन का उद्देश्य पूर्ण होगा।" यही भावना उनके भीतर जलती ज्योति की तरह सदैव प्रज्वलित रहती थी।

एक दिन, उनकी अंतरात्मा से एक पुकार उठी — "अब वृंदावन के बाद मुझे जगन्नाथ पुरी जाना है। वहां उस प्रभु के दर्शन करने हैं जो स्वयं अपने भक्तों के लिए अन्नदाता बने हुए हैं, जो दिन में भगवान और रात में दास बनकर अपने भक्तों की सेवा करते हैं।" उसी क्षण उन्होंने निर्णय ले लिया। न सवारी, न भोजन की चिंता, न धन का प्रबंध — केवल एक लाठी, एक झोली और मन में प्रभु का नाम लेकर वे पैदल यात्रा पर निकल पड़े। रास्ता लंबा था, पर प्रेम का पथ थकान नहीं जानता। सूर्य की तपिश, वर्षा की बौछारें, पथरीले मार्ग — सब कुछ उनके लिए भक्ति के पुष्प समान थे।

कई दिनों की यात्रा के बाद वे ओडिशा पहुँचे। वहाँ एक स्थान था — रेमुणा। वहाँ उन्होंने देखा कि एक भव्य मंदिर खड़ा है, ऊँचे शिखर वाला, जिसकी दीवारें धूप में सुनहरी आभा बिखेर रही थीं। उन्होंने पूछा, "यह किसका मंदिर है?" किसी भक्त ने उत्तर दिया, "यह भगवान गोपीनाथ का मंदिर है। यहाँ रोज प्रभु को सात कसोरों में खीर का भोग लगता है, जिसे बाद में भक्तों में बाँटा जाता है।" यह सुनकर माधवदास के चेहरे पर एक दिव्य मुस्कान खिल उठी — "शायद आज प्रभु की इच्छा है कि मुझे उनके ही हाथों से निकला प्रसाद प्राप्त हो।"

वे धीरे-धीरे मंदिर के भीतर गए। अंदर का दृश्य अद्भुत था। घंटियों की मधुर ध्वनि, धूप और चंदन की सुगंध, दीपों की लौ में चमकता गोपीनाथ का मुखमंडल — मानो स्वयं साक्षात ब्रह्म वहाँ विराजमान हों। उन्होंने folded hands से प्रणाम किया और शांत मन से खड़े होकर दर्शन करने लगे। पूजा समाप्त हुई, और फिर पुजारी खीर का प्रसाद भक्तों में बाँटने लगे। माधवदास भी विनम्रतापूर्वक लाइन में लग गए।

लोग एक-एक करके प्रसाद लेते रहे। जब माधवदास की बारी आई, तो पुजारी ने सिर झुकाकर कहा, "माफ करना बाबा, आज खीर खत्म हो गई।" यह सुनकर संत ने क्षणभर के लिए आँखें बंद कीं, मुस्कुराए और बोले, "कोई बात नहीं, प्रभु की इच्छा जो होगी वही होगा।" वे बिना किसी शिकायत के मंदिर के बाहर चले गए।

मंदिर के बाहर एक विशाल पीपल का पेड़ था। उसके नीचे वे बैठ गए। रात का अंधेरा धीरे-धीरे उतरने लगा। ठंडी हवा चल रही थी। उन्होंने आसमान की ओर देखा और बोले, "प्रभु, आप तो भूखों के भी अन्नदाता हैं। आप तो वह करुणामय हैं जो कण-कण में निवास करते हैं। आज मैं आपके द्वार पर आया और प्रसाद नहीं मिला — शायद यह भी आपकी कोई लीला है। मुझे दुख नहीं, क्योंकि आपका नाम ही मेरा आहार है।" यह कहकर वे ध्यानमग्न हो गए।

उसी रात जब मंदिर में सब लोग विश्राम कर चुके थे, पुजारी गहरी नींद में था। तभी उसके स्वप्न में भगवान गोपीनाथ प्रकट हुए। उनकी आँखों में वही मधुर चमक थी, और ओठों पर मुस्कान। उन्होंने कहा, "उठो पुजारी! मेरा एक भक्त भूखा है। वह मंदिर के बाहर पेड़ के नीचे बैठा है। उसके लिए खीर लेकर जाओ।" पुजारी ने झट से कहा, "प्रभु, खीर तो पूरी बाँट दी गई थी, एक भी कसोरा शेष नहीं है।" भगवान ने हँसकर कहा, "सात कसोरों में से एक मैंने अपने लिए रख लिया था। जाओ, मंदिर में देखो।"

पुजारी हड़बड़ा कर उठा, दीप जलाया और मंदिर में गया। वहाँ जो दृश्य उसने देखा, उससे उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई — सचमुच वहाँ एक कसोरा रखा था, जिसमें गर्म खीर भरी थी। भाप उठ रही थी, सुगंध चारों ओर फैली हुई थी। वह काँपते हाथों से वह खीर लेकर बाहर भागा।

पेड़ के नीचे माधवदास अब भी ध्यान में बैठे थे। पुजारी उनके पास पहुँचा, नम्रतापूर्वक बोला, "बाबा, यह खीर प्रभु ने स्वयं आपके लिए भेजी है।" माधवदास ने आँखें खोलीं और आश्चर्य से पूछा, "यह खीर कहाँ से आई? तो सब भक्तों में बाँटी जा चुकी थी।" पुजारी बोला, "प्रभु ने कहा है कि उन्होंने आपके प्रेम के कारण एक कसोरा अपने लिए रख लिया था। वे स्वयं आपके लिए चोर बन गए।"

यह सुनते ही संत माधवदास की आँखों से आँसू झरने लगे। उन्होंने दोनों हाथों से वह कसोरा सिर पर रखा और बोले, "हे मेरे गोपीनाथ, तू मेरे लिए खीर का चोर बन गया! संसार कहे या न कहे, पर मेरे लिए तू सच्चा खीर चौरा है!" कहते हुए वे प्रेम में मग्न होकर नाचने लगे, गाने लगे — "जय गोपीनाथ, जय प्रेममय चोर!"

उस क्षण से रेमुणा का वह मंदिर "खीर चौरा गोपीनाथ मंदिर" कहलाने लगा। आज भी वहाँ प्रतिदिन सात कसोरों में खीर का भोग लगाया जाता है। लोग मानते हैं कि उनमें से एक कसोरा उस दिव्य प्रेम की स्मृति है जो भगवान ने अपने भक्त के लिए दिखाया था। जब भी भक्त वहाँ जाकर खीर का प्रसाद लेते हैं, तो उनके हृदय में यह भाव जाग उठता है कि भगवान का प्रेम किसी सीमा में नहीं बंधता।

यह कथा केवल एक चमत्कार की नहीं, बल्कि यह प्रेम की पराकाष्ठा की कथा है — जहाँ भगवान अपने भक्त के भाव से इतने बंध जाते हैं कि वे स्वयं अपने ही नियमों को तोड़ देते हैं। प्रेम वह बंधन है जिसमें ईश्वर भी कैदी बन जाता है। जब भक्ति सच्ची होती है, तब ईश्वर मंदिरों की मूर्तियों से निकलकर भक्त के हृदय में उतर आता है।

आज भी जब रेमुणा के मंदिर में आरती होती है, घंटियाँ बजती हैं और खीर की सुगंध हवा में घुल जाती है, तो ऐसा लगता है मानो गोपीनाथ फिर मुस्कुरा रहे हों — जैसे कह रहे हों, "मैं आज भी अपने प्रेमी के लिए खीर का चोर बनने को तत्पर हूँ।" यही प्रेम का प्रसाद है — जो केवल स्वाद नहीं, बल्कि आत्मा का अन्न है, जो हृदय को भर देता है और ईश्वर को धरती पर उतार लाता है।

70 साल में भी वेस्ट यूपी नही बनी हाईकोर्ट बेंच

पश्चिमी उत्तर प्रदेश (वेस्ट यूपी) में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की एक बेंच स्थापित करने की मांग एक बहुत पुराना और लगातार जारी रहने वाला आंदोलन है। लगभग 70 साल पुरानी यह मांग केवल एक प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि क्षेत्रीय न्याय, सामाजिक न्याय और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की एक गहरी पुकार है। इस आंदोलन के कामयाब न होने की खास बात यह है कि आंदोलनरत वकील आदोलन से जनता को नही जोड़ सके। वह यह बताने में और जनता में मन में बैठाने में असफल रहे कि हाईकार्ट की बैंच पश्चिम उत्तर प्रदेश में बनने से यहां के रहने वालों को क्या लाभ होगा? 1948 में, उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ स्थापित की गई थी, लेकिन पश्चिमी यूपी को इससे कोई राहत नहीं मिली, क्योंकि लखनऊ भी इस क्षेत्र से काफ़ी दूर था। वैसे 1955 की विधि आयोग की सिफारिशों ने इस आंदोलन को एक नई दिशा दी। आयोग ने सिफारिश की थी कि उच्च न्यायालय की बेंच उन क्षेत्रों में स्थापित की जानी चाहिए, जहाँ से दूरी अधिक है। साल 1955 में तत्कालीन मुख्यमंत्री संपूर्णानंद ने मेरठ में हाईकोर्ट बेंच स्थापित करने की सिफारिश की। वर्ष 1976 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी की सरकार ने केंद्र को खंडपीठ स्थापित किए जाने का प्रस्ताव भेजा । जनता पार्टी के शासन में राम नरेश यादव की सरकार ने भी इस मांग पर मुहर लगाई और पश्चमी यूपी में हाईकोर्ट बेंच स्थापित करने के प्रस्ताव को कर उसे केंद्र सरकार को भेजा। बनारसीदास सरकार एवं बाद में पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के कार्यकाल में भी एक प्रस्ताव पारित कर हाईकोर्ट बेंच की स्थापना की मांग को संस्तुति प्रदान की गईं। प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा गया।

1970 और 1980 के दशक में, यह आंदोलन और भी जोर पकड़ने लगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वकीलों ने हड़तालों और विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। किसान नेता चौधरी चरण सिंह, मुलायम सिंह यादव और अजित सिंह जैसे नेताओं ने भी इस मांग को अपना समर्थन दिया। इससे यह मांग राजनीतिक मुद्दा बन जरूर बन गई किंतु नेताओं की इच्छा शक्ति के अभाव में और इलाहाबाद के वकीलों के दबाव में कभी पूरी नही हुई। आज भी, पश्चिमी यूपी के कई संगठन और बार एसोसिएशन इस मुद्दे पर नियमित रूप से आंदोलन करते रहते हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिलों जैसे मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, गौतम बुद्ध नगर और मथुरा से इलाहाबाद की दूरी 500 से 700 किलोमीटर है। इस लंबी दूरी के कारण मुवक्किलों और वकीलों को अत्यधिक समय, धन और ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। गरीबी और संसाधनों की कमी वाले लोगों के लिए यह एक बड़ा बोझ बन जाता है। इलाहाबाद में एक मुकदमे के लिए जाने का मतलब है, न केवल यात्रा का खर्च, बल्कि वहाँ रहने और खाने का भी खर्च। इसके अलावा, वकीलों की फीस भी अधिक होती है। यह सब मिलकर गरीब और मध्यम वर्ग के लिए न्याय को बहुत महंगा बना देता है। एक बात और इलाहाबाद की जगह यदि पश्चिम उत्तर प्रदेश को लखनऊ खंड पीठ से संबद्ध कर दिया जाता, तब भी दूरी दौ सौ किलोमीटर के आसपास कम हो जाती। लखनऊ पश्चिम उत्तर प्रदेश के नजदीक पड़ता है किंतु ऐसा भी नहीं किया गया इलाहाबाद उच्च न्यायालय में पहले से ही मुकदमों का भारी बोझ है। पश्चिमी यूपी से आने वाले मामलों की बड़ी संख्या के कारण, न्याय में और अधिक देरी होती है। एक बेंच की स्थापना से मामलों का तेजी से निपटारा हो सकेगा, जिससे न्यायपालिका पर दबाव कम होगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश एक आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसे अक्सर "भारत का चीनी का कटोरा" कहा जाता एक हाईकोर्ट बेंच की स्थापना से इस क्षेत्र की न्यायिक और राजनीतिक पहचान मजबूत होगी, और यह एक आत्मनिर्भर केंद्र बन सकेगा।

वर्तमान में भी यह आंदोलन जारी है, हालाँकि इसने कई बार धीमी गति पकड़ी है। 1981 से वकीलों के संगठन नियमित रूप से प्रत्येक शनिवार को हड़ताल करते हैं, वे धरने देते रहतें हैं, और ज्ञापन सौंपते हैं। हालांकि, इस आंदोलन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस आंदोलन के सामने सबसे बडी चुनौती है कि किसी भी राजनीतिक दल ने इस मुद्दे को पूरी गंभीरता से नहीं लिया है। केंद्र और राज्य सरकारें इस मांग को टालती रही हैं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वकील इस मांग का विरोध करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि एक बेंच की स्थापना से उनका काम और आय प्रभावित होगी। सरकार का तर्क है कि एक बेंच की स्थापना से प्रशासनिक जटिलताएँ बढ़ेंगी और यह एक आर्थिक बोझ होगा। इसके अलावा, सरकार अक्सर इस मुद्दे को भविष्य के लिए टाल देती है। एक मजबूत और एकीकृत नेतृत्व की कमी ने इस आंदोलन को कमजोर किया है। अलग-अलग संगठन अपने-अपने तरीके से आंदोलन चला रहे हैं, जिससे एकता नहीं बन पाती। हाल में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद हाईकोर्ट की बेंच स्थापना के लिए सांसद अरुण गोविल मुखर हो गए हैं। मेरठ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सामने यह मांग उठाने के बाद सांसद अब अधिवक्ताओं की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कराएंगे। इसके लिए सांसद ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर अधिवक्ताओं के लिए मिलने का समय मांगा है। सांसद ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लगभग छह करोड़ आबादी को सस्ता, सुलभ और त्वरित न्याय दिलाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। महाराष्ट्र जैसे राज्यों में उच्च न्यायालय की चार बेंच हैं मध्य प्रदेश में दो बेंच हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश इतना बड़े होने के बाद भी यहां उच्च न्यायालय की एक पीठ है। इससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए न्याय प्राप्त करना मुश्किल है। सांसद ने कहा कि यहां बेंच मिलने से कम समय में न्याय मिलेगा और धन की भी बचत होगी एक हाईकोर्ट बेंच की स्थापना से न केवल पश्चिमी यूपी के लोगों को न्याय तक पहुँचने में आसानी होगी, बल्कि यह पूरे राज्य की न्याय प्रणाली को मजबूत करेगा। यह आवश्यक है कि सरकार, न्यायपालिका और सभी हितधारक मिलकर इस मुद्दे का समाधान निकालें। पश्चिमी महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में बॉम्बे हाईकोर्ट की एक नई पीठ ओर राज्य में चौथी हाईकोर्ट बेंच के गठन की अधिसूचना एक अगस्त को जैसे ही जारी हुई यूपी के मेरठ में सरगर्मियां बढ़ गईं।

अभियान

हरि और हर के संगम से झरता मोक्ष का अमृत

बिहार की धरती अपने भीतर जितने रहस्य समेटे हुए है, उतनी ही गहराई उसकी श्रद्धा में भी है। इसी धरती पर वह पवित्र स्थान है, जहां गंगा और गंडक की धाराएं एक-दूसरे से मिलकर आध्यात्मिक ज्योति का प्रकाश करती हैं—यह है सोनपुर का हरिहर क्षेत्र। यहीं पर स्थित है वह अनादि तीर्थ, हरिहर नाथ मंदिर, जो केवल एक मंदिर नहीं बल्कि ईश्वर के दो स्वरूपों—हर (शिव) और हरि (विष्णु)—के अद्वैत मिलन की भूमि है। यह वह स्थान है जहां भक्ति अपने सबसे शुद्ध रूप में प्रकट होती है, जहां उपासक यह अनुभव करता है कि सृजन और संहार, पालन और प्रलय—सब उसी एक परम सत्ता के दो रूप हैं। किंवदंती कहती है कि इस पवित्र संगम पर हजारों वर्ष पहले जब गज और ग्राह का युद्ध हुआ, तब एक असहाय हाथी ने जल में डूबते-डूबते भगवान विष्णु को पुकारा। भगवान हरि स्वयं प्रकट हुए और उस भक्त हाथी की रक्षा की। कहते हैं उसी क्षण भगवान शिव भी वहां प्रकट हुए और उन्होंने भगवान विष्णु का आलिंगन किया। वह दृश्य मानो सृष्टि के दो छोरों का मिलन था—विष्णु और शिव का, हरि और हर का। उसी क्षण यह स्थान "हरिहर क्षेत्र" कहलाया, और यह कथा सदा के लिए इस भूमि की आत्मा में बस गई।

समय के प्रवाह में अनेक सभ्यताएं आईं और गईं, पर इस स्थान की पवित्रता अक्षुण्ण रही। मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक, और फिर राजवंशों के युग तक, हरिहर नाथ मंदिर एक जीवंत तीर्थ के रूप में श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बना रहा। कहा जाता है कि स्वयं सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य और उनके गुरु आचार्य चाणक्य भी यहां दर्शन के लिए आए थे। सम्राट अशोक के समय जब भारत बौद्ध धर्म की ओर अग्रसर हो रहा था, तब भी इस तीर्थ की ज्योति मंद नहीं पड़ी। श्रद्धालु दूर-दूर से आते और संगम पर स्नान कर हरिहर नाथ के दर्शन करते।

इस मंदिर की स्थापत्य शैली उत्तर भारतीय नागर शैली की झलक देती है—ऊंचा शिखर, विशाल गर्भगृह और चारों दिशाओं में स्थित देवालय। गर्भगृह में प्रतिष्ठित हरिहर मूर्ति अद्वितीय है, जिसमें एक ही शरीर में भगवान विष्णु और भगवान शिव के अंग समाहित हैं। यह मूर्ति मानो यह सन्देश देती है कि ब्रह्म एक ही है, चाहे उसे कोई विष्णु कहे या महादेव। इस मूर्ति के दर्शन मात्र से ही एक गहरी शांति और आत्मबोध का अनुभव होता है। हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहां से एक महान पर्व आरंभ होता है, जो एक महीने तक चलता है। इस काल में गंगा और गंडक के संगम पर लाखों श्रद्धालु एकत्र होते हैं। लोग स्नान करते हैं, दीपदान करते हैं और हरिहर नाथ के दर्शन कर मोक्ष की कामना करते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस अवधि में यहां स्नान और दर्शन करने से व्यक्ति के पाप नष्ट होते हैं और आत्मा मुक्त होती है। इसी दिन से आरंभ होता है प्रसिद्ध सोनपुर मेला—जो न केवल भारत बल्कि एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। यह मेला उस काल से चलता आ रहा है जब मनुष्य और पशु का संबंध मात्र उपयोग का नहीं, सह-अस्तित्व का था।

सोनपुर मेला अपने आप में केवल व्यापार का स्थल नहीं है, बल्कि लोकजीवन, आस्था और संस्कृति का एक उत्सव है। यहां गांवों से आए लोग, साधु-संत, नागा बाबा, कलावंत और व्यापारी—सभी एक साथ जीवन की लय में झूमते हैं। भक्ति और बाजार, अध्यात्म और आजीविका—दोनों का यह संगम इस भूमि की विशेषता है। कार्तिक पूर्णिमा की रात जब गंगा-गंडक के जल पर हजारों दीप झिलमिलाते हैं, तो लगता है मानो आकाश के तारों ने धरती पर अवतार लिया हो। हरिहर नाथ मंदिर न केवल धर्म का प्रतीक है बल्कि वह भारतीय दर्शन की एकता का जीवंत उदाहरण भी है। यहां आकर यह अनुभव होता है कि ब्रह्म की पहचान द्वैत में नहीं, बल्कि अद्वैत में है। भगवान हरि और हर एक ही परम चेतना के दो आयाम हैं—एक सृजन का, दूसरा संहार का; एक पालन का, दूसरा तप का। परंतु दोनों का सार एक ही है—करुणा और मोक्ष। कहते हैं, जिसने हरिहर क्षेत्र के दर्शन किए, वह केवल मंदिर नहीं देखता, वह आत्मा के मिलन को अनुभव करता है। गंगा और गंडक का संगम यहां केवल नदियों का मिलन नहीं, बल्कि चेतना का संयोग है—जहां भौतिक जगत आत्मिक जगत से मिलता है, और मनुष्य अपने भीतर बसे ईश्वर से।

आज भी हर वर्ष जब लाखों श्रद्धालु इस भूमि पर पहुंचते हैं, तो उनके हृदय में वही प्रार्थना गूंजती है—

"हे हरि, हे हर! हमें उस सत्य का बोध दो जो तुममें एक है। हमें उस मोक्ष का मार्ग दिखाओ जो भक्ति और प्रेम के संगम से निकलता है।"

यही कारण है कि सोनपुर का हरिहर क्षेत्र केवल बिहार का नहीं, सम्पूर्ण भारत की आत्मा का प्रतीक बन चुका है। यह वह भूमि है जहां ईश्वर ने स्वयं मनुष्य को यह सिखाया कि भेद में भी एकता है, और भक्ति का परम फल वही है जब साधक हर और हरि दोनों को एक ही नयन से देखना सीख जाए।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में 'भारत पर्व' का प्रकाशमय उत्सव एकता नगर जगमगा उठा प्रकाश के रंग से

- भारतीय शैली की कलरफुल लाइटिंग से झिलमिलती स्टैच्यू ऑफ यूनिटी
- प्रकाश पर्व पैवेलियन में लाइटिंग के साथ ढेरों सेल्फी ले रहे पर्यटक
- एलईडी डाइनामिक लाइटिंग से प्रकृति एवं टेक्नोलॉजी के बीच परफेक्ट सिम्फनी रचती है
- लाइटिंग की जगमगाहट से प्रकाशित हुआ राष्ट्रीय एकता एवं प्रकृति के प्रति प्रेम
- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के आकाशीय दृश्यों का अद्भुत नजारा पर्यटकों का आकर्षण
- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्थित जंगल सफारी, कैक्टस गार्डन, बटरफ्लाई गार्डन, सर्किट हाउस, एकता मॉल, एडमिन बिल्डिंग रंगबिरंगी लाइटिंग से जगमगाए

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारतीय संस्कृति में प्रकाश को अंधकार दूर करने के साथ आध्यात्मिक ऊर्जा एवं उत्साह के प्रतीक के रूप में भी माना जाता है। तीज-त्योहार तथा धार्मिक उत्सव में प्रकाश का स्थान महत्वपूर्ण एवं अडिग रहा है। आज के युग में लाइटिंग एक आर्ट बन गई है और भारतीय लाइटिंग शैली की झलक पेरिस के फेस्टिव ऑफ लाइट्स तथा दुबई के लाइट डोम शो में देखने को मिलती है। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में भारत पर्व का ऐतिहासिक उत्सव मनाया जा रहा है, तब एकता नगर कलरफुर लाइटिंग्स के प्रकाश से जगमगा उठा है। प्रकाश पर्व के अवसर पर एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर प्रकाश से जगमगा उठा है। मानो एकता नगर दुल्हन की तरह सज गया है। समग्र क्षेत्र को विभिन्न रंगबिरंगी लाइटिंग से भारत की विभिन्न संस्कृतियों तथा परंपराओं की झाँकियों से सजाया गया है, जहाँ भारत की विविधता में एकता के दर्शन होते हैं।

182 मीटर की दुनिया की सबसे ऊँची सरदार वल्लभभाई पटेल की भव्य प्रतिमा से लेकर सरदार सरोवर बांध तक हर स्थान पर तिरंगे रंग में लेसर लाइट से जगमगाहट छा गई है। प्रकाश के विभिन्न रंग भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता का प्रतीक बनकर खड़े हैं। स्थानीय कलाकारों व शिल्पकारों ने भी अपनी हस्तकला कृतियों को लाइटिंग के प्रकाश द्वारा प्रस्तुत किया है। इस लाइटिंग में आधुनिक टेकनोलॉजी के साथ परंपरागत डिजाइन का समन्वय देखने को मिला है। लाइटिंग तथा फोटोग्राफी का संबंध इतना अविभाज्य है कि जहाँ प्रकाश हो, वहाँ कैमरा स्वयं आकर्षित होता है। भारत पर्व में लाइटिंग के साथ पर्यटकों ने हजारों सेल्फी एवं फोटो अपने मोबाइल में संजोए हैं। लाइटिंग से सजाई गई हर थीम अपने भीतर कोई संदेश समेटे है। कहीं राष्ट्रीय एकता का प्रतिबिंब है, तो कहीं प्रकृति के प्रति प्रेम झलकता है। नर्मदा नदी की निर्मल धारा समान इस पर्व के उत्सव में देश के विभिन्न राज्यों की लोककला, लोकसंगीत, हस्तकला तथा भोजन की रसधारा बहती दिखाई देती है। हर राज्य ने अपने परंपरागत वेशभूषा तथा कला द्वारा देश की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रस्तुत किया है, जिससे एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना जीवंत हो उठी है। इस भावना को उजागर करने के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से भारत पर्व का भव्य उत्सव नर्मदा नदी के पवित्र तट पर मनाया जा रहा है।

आज के डिजिटल युग में लाइट फेस्टिवल जैसे प्रसंग सेल्फी कल्चर का हिस्सा बन गए हैं, जहाँ हर फोटो पर्यटकों को प्रकाश, आनंद तथा भारतीय संस्कृति की एक नई कहानी कहती है।

प्रकाश पर्व पैवेलियन में 5 प्रकार की एलईडी लाइटिंग टेक्नोलॉजी द्वारा डेकोरेटिव सुशोभन किया गया

एकता प्रकाश पर्व पैवेलियन में एलईडी लाइट्स, आरजीबी एलईडी नियोन फ्लेक्स स्ट्रिप लाइट्स, कलरफुल लेसर प्रोजेक्शन लाइट्स, स्मार्ट सिंक्रोनाइज्ड लाइट्स, सोलर पावर्ड लाइटिंग से रजवाड़ा शैली के आर्किटेक्चर में देखने को मिल रही फूलों की नाजुक कढ़ाई, स्वर्ण अलंकार, क्लासिकल आकारों की लाइटिंग की कृतियाँ एकता द्वार से लेकर स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक के सात किलोमीटर के क्षेत्र की स्ट्रीट लाइट, गेंट्री मोटिफ्स, सरकारी भवन, पर्यटन आकर्षण, सर्किट हाउस, एकता मॉल, एडमिन बिल्डिंग तथा मुख्य मार्ग पर स्थित पेड़ विभिन्न लिटिंग डेकोरेशन से सुशोभित किए गए हैं।

मुख्य मार्ग से वैली ऑफ फ्लावर्स तक के 530 मीटर के मार्ग में सीलिंग लाइट्स, विभिन्न प्रकार के लाइटिंग आर्टिकल्स तथा थीम आधारित सेल्फी पॉइंट्स के साथ फोट बूथ्स आकाशगंगा की झाँकी देती दिखाई देती है। इसके साथ इसरो के मिशन चंद्रयान, ऑपरेशन सिंदूर की थीम, पक्षी, प्राणी, कलात्मक रूप, पेड़, फूल, धार्मिक चिह्न, ग्रह तथा सौरमंडल के रूप में आध्यात्मिक भारत की अद्भुत संकल्पनाओं को प्रकाश के रूप में व्यक्त किया गया है। वैली ऑफ फ्लावर्स पैवेलियन में 140 मीटर लंबे वॉक-वे को ग्लो टनल में विभिन्न थीम आधारित कलरफुल लाइटिंग से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, जंगल सफारी, कैक्टस गार्डन, बटरफ्लाई गार्डन, उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा, सोमनाथ, द्वारका, डाकोर जैसे विभिन्न धार्मिक स्थलों की थीम से कृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं। सरदार सरोवर बांध में विशेष डिडाइन किए गए डाइनामिक लाइट एंड साउंड तथा सरदार पटेल की प्रतिमा पर शाम को लेसर शो का आयोजन किया गया है, जिसे देखने के लिए पर्यटकों में विशेष आकर्षण देखने को मिलता है।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से भेंट की

वाइब्रेंट गुजरात समिट की सफलता तथा सीएम डैशबोर्ड से प्रभावित हुए साय

(जीएनएस)। गांधीनगर : छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने सोमवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से भेंट की।

श्री साय एकता नगर में चल रहे भारत पर्व में सोमवार रात होने वाली छत्तीसगढ़ राज्य की विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए गुजरात यात्रा पर आए हैं।

वे आगामी समय में छत्तीसगढ़ में आयोजित होने जा रहे छत्तीसगढ़ इन्वेस्टर कनेक्ट में गुजरात के निवेशकों को आकर्षित करने के लिए मंगलवार को अहमदाबाद में उनके साथ बैठकें करने वाले हैं। इन कार्यक्रमों से पहले श्री साय ने सोमवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से मुलाकात की और गुजरात द्वारा वाइब्रेंट समिट की उत्तरोत्तर सफलता के चलते मोस्ट प्रिफर्ड डेस्टिनेशन फॉर इन्वेस्टमेंट का स्थान प्राप्त किए जाने के बारे में जानने में गहरी रुचि दर्शाई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में इस वर्ष रीजनल वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस के प्रयोग द्वारा गुजरात के जिलों में औद्योगिक निवेशकों को प्रोत्साहित कर वोकल फॉर लोकल तथा लोकल टु ग्लोबल के उद्देश्य के साथ वर्ल्ड मार्केट देने के दृष्टिकोण से अवगत कराया।

श्री साय ने गुजरात की इंडस्ट्रियल पॉलिसी की विस्तृत जानकारी के लिए प्रधान उद्योग सचिव सहित वरिष्ठ सचिवों के साथ भी बैठक की।

इतना ही नहीं; उन्होंने गुजरात में पब्लिक डिलीवरी सर्विसेज सिस्टम तथा जन हितकारी योजनाओं की ट्रांसपरेंट एवं रीयल टाइम मॉनिटरिंग के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में विकसित किए गए सीएम डैशबोर्ड की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सीएम डैशबोर्ड की भी मुलाकात ली। वे रीयल टाइम मॉनिटरिंग तथा जन संवाद केन्द्र के फीडबैक मैकेनिज्म के कामकाज की सघन जानकारी प्राप्त कर प्रभावित हुए। उन्होंने गुजरात की ऐसी पहलों को छत्तीसगढ़ में शुरू करने में भी रुचि दर्शाई। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ मुलाकात के अवसर पर मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, इंडस्ट्रियल एक्सटेंशन ब्यूरो (इंडेक्स्ट-बी) के प्रबंध निदेशक श्री केयुर संपत तथा सीएम डैशबोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी सहभागी हुए।

मेगा रयान मिनिथॉन इवेंट में दस हज़ार से अधिक विद्यार्थी हुए शामिल

(जीएनएस)। मुंबई। देश के स्कूली विद्यार्थियों के लिए आयोजित होने वाले सबसे बड़े मिनिथॉन में से एक प्रमुख और लोकप्रिय *"मेगा रयान मिनिथॉन-2025"* का सफल आयोजन रविवार, 9 नवम्बर, 2025 को नवी मुंबई में किया गया, जिसमें मुंबई और नवी मुंबई के 24 स्कूलों के 10,605 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए आयोजन संस्थान की प्रमुख प्रतिनिधि और मुंबई की वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती प्रमिला शर्मा ने बताया कि *"मेगा रयान मिनिथॉन 2025"* का आयोजन रयान ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के तत्वावधान में स्कूली छात्रों के लिए 218 वीं दौड़ के रूप में किया गया, जिसका मार्गदर्शन सेंट जेवियर्स के चेयरमैन और रयान इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के मैनेजमेंट ने किया। इस दौड़ को रयान इंटरनेशनल स्कूल, नेरुल से समूह के निदेशक डॉ. स्नेहल पिंटो, स्थानीय पार्षद रवींद्र इथापे, श्रीमती सुरेखा इथापे, शुभम वनमाली, रणवीर सिंह, सुजीत अशोक गडकरी, जाह्नवी शेट्टी, प्रियंका सुजीश, किरण अंचन और विशाल यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उनके साथ आर्यन कमलेश शिर्के, अखलाक खान, कोमल कांबले, पूजा धमाल, हर्ष अग्रवाल, नमोह उनियाल, संजोग गडकरी, चनप्रीत सिंह भुई, शुभम गौर, प्रतीक ठाकुर, सुश्री सुगंध हैमिल्टन, जोस जैकब, अविनाश अशोक तांबे, सुप्रिया ठाकुर, डॉ. सौरभ सावंत, विराज निमुनकर, मुनेश पुजारी और पल्लवी कोठावड़े भी शामिल रहे।

रयान ग्रुप ऑफ स्कूल्स की सुस्थापित परम्परा का पालन करते हुए, विभिन्न क्षेत्रों से आये अतिथियों ने मेगा रयान मिनिथॉन 2025 के शुभारम्भ के बाद पौधारोपण भी किया। अंडर-12 से अंडर-18 तक के खेलकूद के शौकीन विद्यार्थी पीटी वर्दी पहने हुए मैराथन मार्ग पर दौड़ में शामिल हुए, जिनके साथ सभी भाग लेने वाले स्कूलों के शिक्षकों की एक सतत मानव श्रृंखला भी बनी रही। रयान इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस देश में एक खेल संस्कृति विकसित करने के लिए 1998 से बेंगलुरु, दिल्ली, चंडीगढ़, नागपुर, सूरत, जालना, जयपुर और नवी मुंबई में इस तरह की दौड़ का आयोजन करता आ रहा है, जो युवा छात्रों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों के लिए तैयार करने के लिए अनुकूल पहल है। इनमें हर साल औसतन 70 हज़ार छात्र और 350 से अधिक संस्थान भाग लेते हैं। समूह के अध्यक्ष डॉ. ए. एफ. पिंटो ने बताया कि यह मिनिथॉन पूरे भारत में सभी एथलीटों के लिए एक सकारात्मक प्रेरणा है और इस तरह के मिनिथॉन युवाओं के मन में खेलों के प्रति अभिरुचि को बढ़ावा देते हैं। मिनिथॉन में विभिन्न आयु समूहों के विजेताओं को कई प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति में एक शानदार समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का दूसरा सत्र आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों के लिए विभिन्न भाग लेने वाले स्कूलों द्वारा आयोजित एक मनोरंजक कार्यक्रम था। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभु की प्रार्थना, बाइबिल पाठ और प्रार्थना गीत से हुई। जेवियर्स हाई स्कूल एसएससी, गोरेगांव ने 62 अंक हासिल करके नवी मुंबई संभाग के 26वें रयान मिनिथॉन 2025 की चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती। 32 अंकों के साथ सेंट लॉरेंस हाई स्कूल एसएससी, बोरीवली दूसरे स्थान पर और 18 अंकों के साथ सेंट जेवियर्स हाई स्कूल एसएससी, नायगांव तीसरे स्थान पर रहा। प्रत्येक श्रेणी में छह पुरस्कार छात्रों को दिए गए। प्रत्येक दौड़ के कुल अंकों के आधार पर चैंपियनशिप ट्रॉफी का फैसला किया गया।

न्यू भुज रेलवे स्टेशन का उन्नयन कार्य तेजी से प्रगति पर,75 प्रतिशत कार्यपूर्ण, यात्रियों को मिलेंगी आधुनिक अवसंरचना और विश्वस्तरीय सुविधाएँ

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर अमृत भारत स्टेशन योजना (ABSS) के अंतर्गत न्यू भुज रेलवे स्टेशन का उन्नयन कार्य तेज़ी से प्रगति पर है। इस परियोजना की स्वीकृत लागत लगभग 200 करोड़ है, जिसमें से लगभग 75% कार्य अब तक पूर्ण हो चुका है। साथ ही भुज स्टेशन यार्ड में दो पिट लाइन भी बनाई जा रही है, नई पिट लाइनें बनने से कोचिंग ऑपरेशनों की क्षमता और दक्षता में वृद्धि होगी, जिससे अधिक ट्रेनों की रेक मेंटेनेंस और ऑपरेशन संभव हो सकेगा। भुज-नलिया मीटर गेज रेलखंड (101.40 किमी) को ब्रॉड गेज लाइन में परिवर्तित किया जा चुका है। जिसे 28 अक्टूबर 2024 को माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश को समर्पित किया। साथ ही नलिया से जखाऊ पोर्ट तक 28.88 किमी नई ब्रॉड गेज लाइन का कार्य प्रगति पर है। इससे कच्छ जिले के दूरस्थ क्षेत्रों को देश के रेल नेटवर्क से निर्बाध ब्रॉड गेज संपर्क प्रदान होगा। इस रेल लाइन से पोर्ट कनेक्टिविटी में वृद्धि होगी तथा कच्छ जिले में बंदरगाहों के माध्यम से निर्यात-आयात को प्रोत्साहन मिलेगा। इस क्षेत्र के सीमेंट उद्योगों को भी इससे विशेष लाभ होगा और नमक, खनिज एवं अन्य कच्चे माल के कुशल परिवहन में सुगमता आएगी।

भुज-नलिया रेल लाइन का आगे वायोर तक (26.55 किमी) विस्तार का कार्य भी प्रगति पर है इसके पूर्ण होने पर देश की सेना को सीमा क्षेत्र तक पहुँचने और सामान परिवहन में भी सुविधा मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 27 अगस्त 2025 को देशलपार - हाजीपीर - लूना और वायोर - लखपत नई लाइन परियोजनाओं को मंजूरी दी है। प्रस्तावित नई रेल लाइन कच्छ क्षेत्र के सुदूर इलाकों को कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। यह गुजरात के मौजूदा रेलवे नेटवर्क में 145 रूट किमी और जोड़ेगी, जिसकी अनुमानित लागत 2526 करोड़ रुपये है।

गुजरात राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के अलावा, यह नई रेल लाइन नमक, सीमेंट, कोयला, क्लिंकर और बेंटोनाइट के परिवहन में भी मदद करेगी। इस परियोजना का सामरिक महत्व यह है कि यह कच्छ के रण को कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। हड़प्पा स्थल धोलावीरा, कोटेश्वर मंदिर, नारायण सरोवर और लखपत किला भी रेल नेटवर्क के अंतर्गत आएंगे क्योंकि 13 नए रेलवे स्टेशन जोड़े जाएँगे जिससे 866 गाँवों और लगभग 16 लाख आबादी को लाभ होगा। इन विकासात्मक पहलों से क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति को गति मिलेगी।

गुजरात का गांधीधाम क्षेत्र पश्चिम रेलवे का अधिकतम माल लदान वाला क्षेत्र है यहां से अप्रैल 2025 से अक्टूबर 2025 तक औद्योगिक नमक का 1.727 मिलियन मीट्रिक टनT, खाद्य नमक का 1.119 मिलियन मीट्रिक टन और कंटेनर का 10.586 मिलियन मीट्रिक टन का लदान किया गया। जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

न्यू भुज स्टेशन का यह रूपांतरण न केवल रेल यात्रियों के लिए बल्कि स्थानीय नागरिकों और पर्यटकों के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा। भुज स्टेशन को आगामी 40 से 50 वर्षों तक की कच्छ क्षेत्र की यात्रा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पुनर्विकसित किया जा रहा है।

परियोजना की प्रमुख विशेषताएँ एवं लाभः

- मुख्य स्टेशन भवनः लगभग 1.37 लाख वर्गफुट क्षेत्र में तथा द्वितीय प्रवेश भवन 11,600 वर्गफुट क्षेत्र में बनाया जा रहा है, जिससे यात्रियों की आवाजाही और सुगमता में वृद्धि होगी।
- आधुनिक वेटिंग एरिया कांकर्सः 8,000 वर्गफुट में 450 से अधिक यात्रियों के बैठने की व्यवस्था होगी, जिससे प्रतीक्षा के दौरान आरामदायक रहेगा।
- विशाल कांकर्सः (35,000 वर्गफुट) यात्रियों के आवागमन को सुविधाजनक बनाएगा और भीड़-प्रबंधन में सहायता करेगा।
- सुगम संपर्क व्यवस्थाः स्टेशन पर कुल 3 फुट ओवरब्रिज (FOB) बनाए जा रहे हैं, जिनमें दो 6 मीटर चौड़े एवं एक 8 मीटर चौड़ा है। इससे प्लेटफॉर्मों के बीच यात्रियों की आवाजाही और अधिक सुरक्षित एवं आसान होगी।
- प्लेटफ़ॉर्म उन्नयनः लगभग 1.32 लाख वर्गफुट क्षेत्र जिसमें 1.20 लाख वर्गफुट की छतयुक्त संरचना यात्रियों को हर मौसम में सुविधा प्रदान करेगी।
- हरित एवं स्मार्ट अवसंरचनाः 500 KWP सौर ऊर्जा संयंत्र, वर्षा जल संचयन प्रणाली, 560 KLD सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट तथा 32,000 वर्गफुट से अधिक हरित क्षेत्र का विकास पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाएगा।
- उन्नत यात्री सुविधाएँः 13 लिफ्ट, 10 एस्केलेटर, आधुनिक फायर डिटेक्शन सिस्टम, 250 टन क्षमता का HVAC सिस्टम (Heating, Ventilation and Air Conditioning), CCTV निगरानी, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, एक्सेस कंट्रोल, SCADA (Automatic Chemical Agent Detection and Alarm) और Wi-Fi सुविधा से यात्रियों को सुरक्षा, सुविधा और कनेक्टिविटी का समन्वय मिलेगा।
- पार्किंग सुविधाः स्टेशन के दोनों ओर 50 से अधिक कारों, 400 से अधिक दोपहिया वाहनों, 30 ऑटो रिक्शा और 4 इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन की व्यवस्था की जा रही है, जिससे यात्रियों और स्थानीय नागरिकों को बेहतर पार्किंग अनुभव मिलेगा।
- पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रतिबद्धताः हरित भवन प्रमाणन प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, साथ ही परिसर में वृक्षारोपण एवं पौधारोपण से स्वच्छ और हरित वातावरण सुनिश्चित किया जाएगा।

गुजरात सरकार के उद्यमिता प्रशिक्षण से राज्य के जनजातीय बन रहे आत्मनिर्भर, पिछले 4 वर्षों में 120+ जनजातीय बने सफल उद्यमी

- पिछले 4 वर्षों में 2 करोड़ खर्च कर 1,000+ युवाओं को दिया उद्यमिता प्रशिक्षण
- उद्यमिता प्रशिक्षण के लिए राज्यभर में संचालित है 42 स्किल अप-ग्रेडेशन सेंटर्स (SUCs) और 9 रीजनल सेन्टर्स
- वर्ष 2021–22 से 2024–25 के बीच 1300+ जनजातीय युवाओं को मिला कौशल प्रशिक्षण, 223 लाभार्थियों को मिले रोजगार के अवसर

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "जनजातीय समाज को आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसर करने" के विचार मंत्र को आधार बनाकर गुजरात सरकार राज्य के आदिवासी समाज के आर्थिक सशक्तिकरण, और आत्मनिर्भरता के लिए कई गहन प्रयास कर रही है। गुजरात के उद्योग आयुक्त कार्यालय के अंतर्गत कार्यरत उद्यमिता विकास केंद्र (CED गुजरात) द्वारा जनजातीय युवाओं के कौशल, रोजगार और उद्यमिता विकास को गति देने के लिए कई वर्षों से उद्यमिता प्रशिक्षण और कौशल विकास की सुविधा दी जा रही है।

4 वर्षों में 1,000+ युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण, 2 करोड़ खर्च, 120 बने सफल उद्यमी

पिछले चार वर्षों (2021-22 से 2024-25) में गुजरात सरकार, उद्योग आयुक्तालय के अधीन कार्यरत सेंटर फॉर ऑन्त्रप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट (CED) ने 14 से अधिक जनजातीय जिलों में ऑन्त्रप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम (EDP) और जागरूकता कार्यशालाओं के माध्यम से हजारों युवाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सशक्त रूप से प्रेरित किया है। उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार की इस विशेष पहल के द्वारा हर साल आदिजाति क्षेत्र के लगभग 200 से अधिक युवाओं को विभिन्न उद्यमिता से संबंधित प्रोफेशनल ट्रेनिंग की सुविधा दी जाती है जिससे राज्य के आदिवासी जिलों के लगभग 30 से अधिक प्रशिक्षु स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। बीते 4 वर्षों में राज्य सरकार ने 2 करोड़ खर्च कर 1000+ आदिजाति युवाओं को उद्यमिता प्रशिक्षण की सेवाएँ दी है। इनमें से 120+ युवा अब अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालित करते हुए आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।इसी तरह कौशल विकास के प्रयास के तहत 2021-22 से 2024-25 के दौरान 1300+ जनजातीय युवाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया गया। उल्लेखनीय है कि पिछले तीन वर्षों में 223 आदिजाति युवाओं को प्रशिक्षण के पश्चात प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं।

गुजरात सरकार के प्रयासों से जनजातीय युवा बन रहे आत्मनिर्भरता की मिसाल

गुजरात में कौशल विकास और उद्यमिता प्रशिक्षण के प्रभाव अब ज़मीन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। वलसाड जिले के गुंडलव GIDC में श्री हितेश पटेल ने भी राज्य सरकार के CED से बिज़नेस डेवलपमेंट प्रशिक्षण के बाद स्टैंडर्ड इक्विपमेंट संस्था की स्थापना की। रासायनिक उद्योग में उपयोग होने वाले प्रोसेस पंपों के निर्माण में उनकी कंपनी अब अग्रणी बन चुकी है। आदित्य बिड़ला ग्रुप और MERCK जैसे दिग्गज ग्राहक, 15 सदस्यों की टीम और 3 करोड़ का वार्षिक कारोबार स्पष्ट करता है कि कौशल-आधारित उद्यमिता क्षेत्रीय औद्योगिक विकास के लिए कितनी निर्णायक साबित हो सकती है। डांग की जनजातीय बस्ती की श्रीमती दक्षाबेन बिरारी ने CED के प्रशिक्षण और सखी मंडल के सहयोग से अंबिका हलदर फ़ार्म स्थापित कर पारंपरिक हल्दी खेती को आधुनिक एग्रो-बिज़नेस में बदला।

क्या है जनजातीयों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए गुजरात का उद्यमिता प्रशिक्षण मॉडल?

गुजरात सरकार के उद्यमिता प्रशिक्षण मॉडल में 42 स्किल अप-ग्रेडेशन सेंटर्स, एंकर इन्स्टीट्यूट्स, उद्योग आधारित ब्रिज कोर्सेस और स्पेशलाइज़्ड स्किल डेवलपमेंट सेंट्र को मिलाकर एकीकृत और मज़बूत व्यवस्था विकसित की गई है। आधुनिक उपकरणों, स्मार्ट क्लासरूम और स्थानीय उद्योगों के साथ साझेदारी के माध्यम से इन केंद्रों को इस प्रकार सक्षम बनाया गया है कि प्रशिक्षण सीधे उद्यमिता और रोजगार में परिवर्तित हो सके। ये प्रशिक्षण कोर्स कई क्षेत्रों रासायनिक प्रसंस्करण, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स, परिधान और सिलाई, सौंदर्य एवं वेलनेस, लॉजिस्टिक्स, आईटी और डेटा एंट्री, तथा नवीकरणीय ऊर्जा सहित को कवर करते हैं। राज्य सरकार का कहना है कि इन कोर्सों का पाठ्यक्रम स्थानीय आर्थिक संभावनाओं और उद्योग की वास्तविक जरूरतों के अनुरूप तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात की लोक कला और लोक संस्कृति के प्रहरी पद्मश्री दिवंगत जोरावरसिंह जादव को श्रद्धासुमन अर्पित किए

गुजरात यूनिवर्सिटी में दिवंगत जोरावरसिंह जादव की प्रार्थना सभा आयोजित हुई

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात की जीवंत लोक कलाओं, लोक जीवन और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को 110 से अधिक पुस्तकों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल विरासत के रूप में छोड़ जाने वाले सुप्रसिद्ध लेखक, शोधकर्ता और पद्मश्री पुरस्कार विजेता दिवंगत जोरावरसिंह जादव की प्रार्थना सभा सोमवार को अहमदाबाद स्थित गुजरात यूनिवर्सिटी में आयोजित हुई।

राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस प्रार्थना सभा में उपस्थित रहकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिवंगत जोरावरसिंह जादव लेखक और शोधकर्ता के अलावा गुजरात की धरती को जीवंत रखने वाली लोक कलाओं और लोक कलाकारों के जीवंत संरक्षक थे। आकरुं गांव से शुरू हुई लोक कला संवर्धन की उनकी अनूठी यात्रा गुजरात के सांस्कृतिक इतिहास का एक विशिष्ट अध्याय है।

दिवंगत जोरावरसिंह जादव को वर्ष 2019 में भारत सरकार की ओर से पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने संगीत नाटक अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएं दी थीं।

इसके अलावा, उन्होंने गुजराती लोक संग्रहालय 'विरासत' का सृजन किया, जिसका उद्घाटन भी मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने ही किया था।

प्रार्थना सभा में बड़ी संख्या में लोक कलाकार, साहित्यकार, नागरिक और उनके प्रशंसकों ने उपस्थित रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

बिहार चुनाव 2025 : दूसरे चरण की 122 सीटों पर मतदान आज, 20 जिलों में मतदाताओं का महामुकाबला, गया के तीन गांवों में 25 साल बाद बजेगा लोकतंत्र का नगाड़ा

(जीएनएस)। पटना। बिहार की सियासी जंग अपने निर्णायक पड़ाव पर पहुंच गई है। विधानसभा चुनाव 2025 का दूसरा चरण आज यानी 11 नवंबर को पूरे राज्य की 20 जिलों की 122 विधानसभा सीटों पर होने जा रहा है। मतदान सुबह सात बजे से शुरू होकर शाम छह बजे तक चलेगा। इस चरण में कुल 1,302 उम्मीदवार मैदान में हैं, जिनकी किस्मत आज 3.70 करोड़ से ज्यादा मतदाता अपने वोट से तय करेंगे। इस बार के चुनाव को लेकर मतदाताओं में असाधारण उत्साह देखा जा रहा है। प्रशासन ने मतदान को शांतिपूर्ण और पारदर्शी बनाने के लिए हर बूथ पर वेबकास्टिंग की व्यवस्था की है। 45,399 मतदान केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें से 595 बूथ पूरी तरह महिला कर्मियों द्वारा संचालित होंगे, 91 बूथ दिव्यांगजन संचालित होंगे और 316 को मॉडल बूथ के रूप में सजाया गया है।

सबसे बड़ी बात यह है कि गया जिले के इमामगंज प्रखंड के हेरहज, पथरा और केवलडीह गांवों में 25 साल बाद मतदान होने जा रहा है। इन गांवों में 2001 के बाद से मतदान नहीं हुआ था क्योंकि नक्सलियों की धमकियों और सुरक्षा कारणों से प्रशासन ने मतदान केंद्रों को उस से बारह किलोमीटर दूर के सलैया इलाके में स्थानांतरित कर दिया था। ग्रामीणों के पास वहां तक पहुंचने का कोई साधन नहीं था, जिसके चलते वे लगातार लोकतांत्रिक प्रक्रिया से वंचित रह गए थे। इस बार प्रशासन ने जोखिम उठाकर गांवों में ही बूथ स्थापित किए हैं, जिससे इन गांवों में लोकतंत्र का दीपक एक बार फिर जलने जा रहा है। दूसरे चरण के मतदान में कुल 3.70 करोड़ मतदाता हैं। इनमें 1 करोड़ 95 लाख 44 हजार 41 पुरुष, 1 करोड़ 74 लाख 68 हजार 572 महिलाएं और 943 थर्ड जेंडर मतदाता शामिल हैं। इसके अलावा 7 लाख 69 हजार से अधिक नये युवा पहली बार वोट डालने जा रहे हैं, जो कई सीटों पर चुनावी समीकरण बदलने की क्षमता रखते हैं। इस बार 6,255 ऐसे मतदाता हैं जिनकी उम्र 100 वर्ष से अधिक है, जबकि 4,87,219 मतदाता 80 वर्ष से अधिक उम्र के हैं। साथ ही 4 लाख से अधिक दिव्यांग मतदाता और 63,373 सेवा मतदाता भी इस लोकतांत्रिक पर्व में भाग ले रहे हैं।

दूसरे चरण में पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर, बांका, जमुई, नवादा, गया, औरंगाबाद, जहानाबाद, अरवल, कैमूर और रोहतास के जिलों में वोटिंग होगी। पहले चरण में रिकॉर्ड 65.08 प्रतिशत मतदान हुआ था, जो अब तक का सबसे अधिक है। महिलाओं ने इसमें बाजी मारते हुए 69.04 प्रतिशत मतदान कर इतिहास रचा। पुरुषों का मतदान प्रतिशत 61.56 रहा। मीनापुर सीट पर 77.54 प्रतिशत वोटिंग के साथ सबसे अधिक मतदान दर्ज हुआ, जबकि पटना की कुम्हरार सीट पर सबसे कम 40.17 प्रतिशत वोट पड़े।

राजनीतिक दलों की बात करें तो दूसरे चरण में सभी प्रमुख दलों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक दोनों चरणों में कुल 20 चुनावी सभाएं की हैं, जबकि गृह मंत्री अमित शाह ने 38 जनसभाओं को संबोधित किया।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 16 और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 20 सभाएं कीं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 34 सभाएं कर भाजपा के प्रचार को धार दी। दूसरी ओर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जदयू की ओर से 84 सभाओं में जनता से संपर्क साधा।

वहीं, राजद नेता तेजस्वी यादव इस बार प्रचार के सुपरस्टार साबित हुए हैं। उन्होंने 171 जनसभाएं कर अपने अभियान को व्यापक बनाया। कांग्रेस की तरफ से राहुल गांधी ने 13, प्रियंका गांधी ने 8 और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने 4 सभाएं कीं। लोजपा (रा.) के अरुण भारती के अनुसार, चिराग पासवान ने सबसे अधिक यानी 172 जनसभाएं कीं और यह इस चुनाव में किसी भी नेता का रिकॉर्ड बन गया।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार का यह चुनाव सिर्फ सत्ता परिवर्तन या सत्ता बरकरार रखने की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह प्रदेश की सामाजिक संरचना, जातीय समीकरण और विकास की दिशा तय करने वाला चुनाव है।

दूसरे चरण में कई सीटें ऐसी हैं जहां का मुकाबला बेहद दिलचस्प और रोमांचक हो गया है। गया के इमामगंज में केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी की बहू दीपा कुमारी एनडीए प्रत्याशी हैं और उनका मुकाबला राजद की रितु प्रिया चौधरी और जन सुराज के डॉ. अजीत कुमार से है। काराकाट में भोजपुरी स्टार पवन सिंह की पत्नी ज्योति सिंह निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में मैदान में हैं और जेडीयू, माले व जन सुराज के उम्मीदवारों से टक्कर ले रही हैं। सीमांचल की जोकीहाट सीट पर मुस्लिम वोटों की लड़ाई सबसे तीखी मानी जा रही है। जेडीयू के मंजर आलम, राजद के शाहनवाज आलम, जन सुराज के सरफराज आलम और AIMIM के मुर्शीद आलम के बीच सीधा मुकाबला है। यहां राजद अपने पारंपरिक मुस्लिम वोट बैंक को बचाने में जुटा है, जबकि AIMIM उसे खींचने में कोई कसर नहीं छोड़ रही। रूपौली सीट पर बीमा भारती के जेडीयू छोड़कर राजद में आने से चुनावी समीकरण पूरी तरह बदल चुके हैं। जेडीयू इसे 'विश्वासघात' बताकर मतदाताओं को साधने में जुटी है, जबकि राजद बीमा भारती की लोकप्रियता पर भरोसा कर रही है।

धमदाहा सीट पर जेडीयू मंत्री लेसी सिंह लगातार चौथी बार अपनी पकड़ साबित करने में लगी हैं, जबकि आरजेडी के संतोष कुशवाहा उन्हें कड़ी टक्कर दे रहे हैं।

कड़वा, कहलगांव, गोविंदगंज, रामगढ़ और चकाई जैसी सीटों पर जातीय समीकरणों के साथ-साथ स्थानीय मुद्दे भी निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। चकाई सीट पर 2020 में निर्दलीय उम्मीदवार सुमित सिंह की अप्रत्याशित जीत ने सबको चौंकाया था, अब वे जेडीयू गठबंधन के साथ हैं और दोहराने की चुनौती झेल रहे हैं। रामगढ़ में राजद के सुधाकर सिंह अपनी लोकप्रियता और बेबाक बयानों के बीच पार्टी की उम्मीदों का बोझ उठाए हुए हैं।

कहलगांव में महागठबंधन की आंतरिक खींचतान फिर से सामने आई है, जिससे भाजपा को मौके का लाभ मिलने की संभावना है। गोविंदगंज में कांग्रेस, लोजपा (रा.) और जन सुराज के बीच सीधी त्रिकोणीय लड़ाई है, जो इस बार पूर्वी बिहार की सबसे दिलचस्प टक्कर मानी जा रही है।

बिहार चुनाव का दूसरा चरण राजनीतिक दृष्टि से बेहद अहम माना जा रहा है, क्योंकि इस चरण में मगध, सीमांचल और मिथिलांचल तीनों बेल्ट की सामाजिक और राजनीतिक तस्वीर शामिल है। इन क्षेत्रों में मतदान के रुझान ही तय करेंगे कि तीसरे चरण में जनता का मूड किस ओर झुकेगा। अब पूरा बिहार आज इस लोकतांत्रिक पर्व में भाग लेने जा रहा है। गांवों से लेकर शहरों तक, खेतों से लेकर कारखानों तक हर जगह आज एक ही चर्चा है—"कौन बनेगा बिहार का भाग्य विधाता?"

11 नवंबर की इस वोटिंग के बाद 14 नवंबर को आने वाला परिणाम यह तय करेगा कि बिहार एक बार फिर पुराने रास्ते पर लौटेगा या नई दिशा में आगे बढ़ेगा। आज का दिन बिहार की राजनीति का भविष्य तय करेगा, और शायद अगले पांच वर्षों के विकास, उम्मीद और परिवर्तन का भी रास्ता यही निकालेगा।

श्मशान की जमीन पर बने मकानों पर चला बुलडोजर, प्रशासन की बड़ी कार्रवाई से मचा हड़कंप

(जीएनएस)। शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में सोमवार को प्रशासन ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए श्मशान भूमि पर बने दर्जनों मकानों को ध्वस्त कर दिया। जलालाबाद थाना क्षेत्र के रोली बोली गांव में स्थित लगभग 15 बीघा जमीन को प्रशासन ने मरघट (श्मशान) भूमि घोषित किया है। इसी भूमि पर पिछले कई वर्षों से अवैध रूप से बने करीब 40 से अधिक मकानों पर बुलडोजर चलाया गया। प्रशासनिक कार्रवाई के दौरान भारी पुलिस बल तैनात किया गया था ताकि किसी तरह की अप्रिय स्थिति उत्पन्न न हो।

अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) रजनीश कुमार मिश्रा ने जानकारी दी कि यह भूमि राजस्व अभिलेखों में श्मशान घाट के रूप में दर्ज है, लेकिन वर्षों पहले कुछ लोगों ने इस पर कब्जा कर पक्के मकान बना लिए थे। इनमें से कई लोगों ने पट्टे या जमीन के दस्तावेज होने का दावा किया, पर जांच में पाया गया कि वे पट्टे अभिलेखों में वैध नहीं हैं। उन्होंने बताया कि जलालाबाद तहसीलदार की अदालत ने पहले ही इन 43 घरों पर बेदखली का आदेश पारित कर दिया था, लेकिन कब्जाधारियों ने बार-बार नोटिस मिलने के बाद भी भूमि खाली नहीं की। मिश्रा ने बताया कि बार-बार चेतावनी के बावजूद जब अवैध कब्जे नहीं हटाए गए तो सोमवार को प्रशासन ने पुलिस बल की मौजूदगी में जेसीबी मशीनों से मकानों को तोड़ने की कार्रवाई शुरू की। इस दौरान कई मकानों के मालिकों ने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने स्थिति को नियंत्रण में रखा। कार्रवाई के समय उपजिलाधिकारी, तहसीलदार और पुलिस अधिकारी मौके पर मौजूद रहे।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि इनमें से कुछ लोगों के पास जमीन के पुराने पट्टे हैं जो कई दशक पहले जारी किए गए थे, जबकि कई मकान हाल के वर्षों में बने हैं। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि प्रशासन ने बिना पर्याप्त जांच किए अचानक तोड़फोड़ शुरू कर दी, जिससे गरीब परिवार बेघर हो गए। वहीं प्रशासन का कहना है कि यह भूमि सार्वजनिक उपयोग के लिए आरक्षित थी और इसे निजी कब्जे में नहीं छोड़ा जा सकता। बुलडोजर कार्रवाई के दौरान कई घरों के मलबे में लोगों के घरेलू सामान दब गए और महिलाएं-बच्चे रोते-बिलखते नजर आए। प्रशासन ने कहा है कि जिन परिवारों को इस कार्रवाई से नुकसान हुआ है, उन्हें राहत और पुनर्वास की व्यवस्था करने पर विचार किया जा रहा है, लेकिन फिलहाल प्राथमिकता श्मशान भूमि को पूर्ण रूप से खाली कराना है ताकि भविष्य में यहां कोई अवैध निर्माण न हो सके।

जमीन के बदले नौकरी घोटालाः लालू परिवार पर आरोप तय करने को चार दिसंबर तक टला फैसला

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने सोमवार को 'जमीन के बदले नौकरी' घोटाले में आरजेडी प्रमुख और पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, सांसद मीसा भारती, तेज प्रताप यादव और अन्य आरोपियों के खिलाफ आरोप तय करने के आदेश को फिलहाल टाल दिया है। अब अदालत इस मामले में अगली सुनवाई चार दिसंबर को करेगी, जिस दिन यह निर्णय लिया जाएगा कि आरोप तय किए जाएं या नहीं। यह मामला यूपीए सरकार के कार्यकाल के दौरान रेलवे में नौकरियों के बदले कथित रूप से रिश्वत के रूप में जमीन लेने से संबंधित है।

सीबीआई ने इस मामले में लालू परिवार सहित अन्य लोगों के खिलाफ विस्तृत आरोपपत्र दाखिल किया था। एजेंसी का आरोप है कि रेलवे में ग्रुप-डी की नौकरियों के बदले उम्मीदवारों से जमीनें उनके परिजनों या करीबी लोगों के नाम पर लिखवाई गईं। इन जमीनों का मूल्य उस समय बाजार दर से काफी कम था, जिससे सरकारी पदों के बदले में निजी लाभ हासिल किया गया। सीबीआई ने इस कार्रवाई को भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग का गंभीर मामला बताया है।

सीबीआई ने लालू यादव और उनके परिवार पर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 120बी (आपराधिक साजिश), 420 (धोखाधड़ी), 467 और 468 (फर्जी दस्तावेज बनाना) के साथ-साथ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धाराओं 11, 12, 13(1)(डी) और 13(2) के तहत आरोप लगाए हैं। विशेष लोक अभियोजक डीपी सिंह ने अदालत में कहा कि एजेंसी के पास पर्याप्त साक्ष्य हैं जो यह साबित करते हैं कि सरकारी पदों के बदले में निजी संपत्ति हासिल की गई। सीबीआई ने यह भी बताया कि रेलवे के कई ज़ोन में ऐसे कई मामले दर्ज किए गए थे, जिनमें उम्मीदवारों को नौकरी के बदले लालू परिवार के करीबी लोगों को जमीनें देनी पड़ी थीं।

गांधीनगर-जयपुर स्टेशन का पुनर्विकास कार्य 35 दिनों के ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के गांधीनगर-जयपुर स्टेशन के पुनर्विकास और बड़े स्तर पर उन्नयन कार्य के मद्देनजर 9 नवंबर से 13 दिसंबर, 2025 तक 35 दिनों का ब्लॉक लिया गया है, जिसके कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट/आंशिक रूप से निरस्त होने वाली ट्रेनेंः

1. 11 दिसंबर, 2025 तक बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12979 बांद्रा टर्मिनस-जयपुर एक्सप्रेस सांगानेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन सांगानेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
2. 10 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22933 बांद्रा टर्मिनस-जयपुर एक्सप्रेस सांगानेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन सांगानेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 11 नवंबर, 2025 से 9 दिसंबर, 2025 तक जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22934 जयपुर-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस सांगानेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और सांगानेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
3. 21 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12955 मुंबई सेंट्रल-जयपुर एक्सप्रेस दुर्गापुरा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन दुर्गापुरा और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 22 नवंबर, 2025 से 9 दिसंबर, 2025 तक जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12956 जयपुर-मुंबई सेंट्रल एक्सप्रेस दुर्गापुरा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और दुर्गापुरा के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
4. 22 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09001 मुंबई सेंट्रल-खातीपुरा स्पेशल अजमेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अजमेर और खातीपुरा के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 23 नवंबर, 2025 से 9 दिसंबर, 2025 तक खातीपुरा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09002 खातीपुरा-मुंबई सेंट्रल स्पेशल अजमेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन खातीपुरा और अजमेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
5. 8 दिसंबर, 2025 को ओखा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20951 ओखा-जयपुर एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अजमेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 9 दिसंबर, 2025 को जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20952 जयपुर-ओखा एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और अजमेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनेंः

1. 13 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12215 दिल्ली सराय रोहिल्ला-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
2. 13 नवंबर, 2025 से 12 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
3. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19416 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
4. 09 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
5. 24 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20938 दिल्ली सराय रोहिल्ला-पोरबंदर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
6. 26 नवंबर, 2025 और 3 दिसंबर, 2025 तक सुल्तानपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20940 सुल्तानपुर-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
7. 29 नवंबर, 2025 और 06 दिसंबर, 2025 को वाराणसी से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20964 वाराणसी-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
8. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को लखनऊ से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19402 लखनऊ-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-साबरमती स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।
9. 25 नवंबर, 2025 को अयोध्या कैंट से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19202 अयोध्या कैंट-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-अहमदाबाद-विरमगाम स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।

रिशेड्युल होने वाली ट्रेनेंः

1. 30 नवंबर, 2025 को मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12239 मुंबई सेंट्रल-हिसार एक्सप्रेस मुंबई सेंट्रल स्टेशन से 01:00 घंटा रिशेड्युल की जाएगी।
2. 23 नवंबर, 2025 से 07 दिसंबर, 2025 तक मुंबई सेंट्रल से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12239 मुंबई सेंट्रल-हिसार एक्सप्रेस मुंबई सेंट्रल स्टेशन से 01:30 घंटे रिशेड्युल की जाएगी।
3. 23 नवंबर, 2025 को इंदौर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12465 इंदौर-भगत की कोठी एक्सप्रेस इंदौर स्टेशन से 03:00 घंटे रिशेड्युल की जाएगी।

मुजफ्फरनगर में छात्र उज्ज्वल राणा की आत्मदाह के बाद मौत, इंसाफ की मांग को लेकर सड़क पर उतरे लोग — 48 घंटे में गिरफ्तारी का वादा

(जीएनएस)। मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में डीएवी कॉलेज के छात्र उज्ज्वल राणा की आत्मदाह के बाद मौत ने पूरे इलाके को झकझोर दिया है। फीस विवाद को लेकर आत्मदाह का प्रयास करने वाले उज्ज्वल ने दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में रविवार शाम दम तोड़ दिया। उसकी मौत के बाद जिले में गुस्सा और आक्रोश फैल गया। सोमवार को छात्र संगठनों, किसान संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और परिजनों ने कॉलेज परिसर में धरना प्रदर्शन करते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की। प्रदर्शन इतना तीव्र था कि जिला प्रशासन को मौके पर भारी पुलिस बल तैनात करना पड़ा और बातचीत के बाद प्रशासन ने प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया कि 48 घंटे के भीतर कॉलेज के प्रिंसिपल, पीटीआई और संबंधित पुलिसकर्मियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

शनिवार को हुई इस दर्दनाक घटना ने कॉलेज प्रबंधन पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। उज्ज्वल राणा, जो बी.ए. के तीसरे सेमेस्टर का छात्र था, ने कॉलेज में फीस के दबाव और अधिकारियों के अपमानजनक व्यवहार से तंग आकर आत्मदाह का कदम उठाया। छात्र ने खुद को पेट्रोल डालकर आग लगा ली थी, जिससे वह 80 प्रतिशत तक झुलस गया था। गंभीर हालत में उसे दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन इलाज के दौरान रविवार शाम उसकी मौत हो गई। सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो में उज्ज्वल ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कॉलेज प्रिंसिपल प्रदीप कुमार, पीटीआई और कुछ पुलिसकर्मियों पर शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना के गंभीर आरोप लगाए थे। वीडियो में वह कहता है कि अगर उसे कुछ हो जाता है, तो इसके जिम्मेदार यही लोग होंगे। उज्ज्वल के बयान ने प्रशासन और कॉलेज प्रबंधन की भूमिका पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

मृतक के चाचा सचिन राणा ने कहा, "हम सर्व समाज के फैसले पर अडिग हैं। जब तक आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होगी, हमें न्याय नहीं मिलेगा। उज्ज्वल ने जो आवाज उठाई थी, वह सिर्फ उसकी नहीं थी, बल्कि उन सभी छात्रों की है जिन्हें सिस्टम ने दबाया।" उन्होंने कहा कि उज्ज्वल की मौत व्यर्थ नहीं जानी चाहिए, इस घटना से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव होना चाहिए।

धरना प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों ने मृतक के परिवार को न्याय दिलाने के लिए कई मांगें रखीं — कॉलेज प्रिंसिपल, पीटीआई और दोषी पुलिसकर्मियों की तत्काल गिरफ्तारी, परिवार को उचित मुआवजा, एक सदस्य को सरकारी नौकरी और डीएवी कॉलेज परिसर में उज्ज्वल की प्रतिमा स्थापित की जाए। साथ ही छात्रों ने मांग की कि कॉलेजों में फीस और अनुशासन से जुड़ी नीतियों को मानवीय दृष्टिकोण से संशोधित किया जाए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों।

दिल्ली दंगा मामले में कपिल मिश्रा को बड़ी राहत, राउज़ एवेन्यू कोर्ट ने जांच आदेश किया रद्द, पुलिस और मंत्री दोनों की याचिका स्वीकार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिल्ली दंगा मामले में भाजपा नेता और दिल्ली सरकार के कानून मंत्री कपिल मिश्रा को बड़ी कानूनी राहत मिली है। राजधानी की राउज़ एवेन्यू कोर्ट ने उस आदेश को रद्द कर दिया है जिसमें मजिस्ट्रेट कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को निर्देश दिया था कि वह उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों में कपिल मिश्रा की भूमिका की जांच करे। इस फैसले के साथ ही कोर्ट ने कपिल मिश्रा और दिल्ली पुलिस दोनों की ओर से दायर रिवीजन याचिकाओं को स्वीकार कर लिया है। विशेष न्यायाधीश डिग विनय सिंह ने साफ कहा कि ट्रायल कोर्ट का पूर्व आदेश न्यायसंगत नहीं था और मामले में जांच पहले ही पूरी की जा चुकी है। दिल्ली पुलिस ने अपनी दलील में कहा था कि दंगे के दौरान कपिल मिश्रा की संलिप्तता को लेकर पहले ही विस्तृत जांच की जा चुकी है और किसी भी स्तर पर उनके खिलाफ कोई ठोस या प्रत्यक्ष सबूत नहीं मिला। पुलिस ने अदालत को यह भी बताया कि इस मामले में कपिल मिश्रा का नाम किसी भी एफआईआर या चार्जशीट में शामिल नहीं किया गया था, क्योंकि जांच के दौरान उनके खिलाफ कोई अपराध प्रमाणित नहीं हुआ। विशेष अदालत ने इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मजिस्ट्रेट कोर्ट का आदेश निरस्त कर दिया और ट्रायल कोर्ट को यह निर्देश दिया कि वह शिकायत पर कानून के अनुसार आगे की कार्रवाई करे। मामले की जड़ एक शिकायत थी, जो मोहम्मद इलियास नामक व्यक्ति ने दायर की थी। इलियास ने अपनी याचिका में आरोप लगाया था कि 23 फरवरी 2020 को उत्तर-पूर्वी दिल्ली के कर्दमपुरी इलाके में उन्होंने कपिल मिश्रा और कुछ अन्य लोगों को सड़क अवरुद्ध करते हुए और स्थानीय ठेलों को गिराते हुए देखा था। उनका दावा था कि यही घटना बाद में हिंसा का कारण बनी। इस शिकायत पर मजिस्ट्रेट कोर्ट ने पुलिस को मिश्रा की भूमिका की जांच करने का आदेश दिया था। इस आदेश को कपिल मिश्रा ने असंवैधानिक और अनुचित बताते हुए चुनौती दी थी। उन्होंने कहा था कि पुलिस पहले ही मामले की जांच कर चुकी है और अब दोबारा जांच कराना न्यायिक प्रक्रिया का दुरुपयोग है। दिल्ली पुलिस ने भी ट्रायल कोर्ट के आदेश के खिलाफ अपील की थी, यह कहते हुए कि पुनः जांच का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि केस की फाइल में कोई नया तथ्य या साक्ष्य नहीं आया है।

25 सितंबर को राउज़ एवेन्यू कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद आदेश सुरक्षित रख लिया था। लगभग डेढ़ महीने बाद मंगलवार को अदालत ने अपना निर्णय सुनाते हुए कपिल मिश्रा को राहत दी। अदालत ने कहा कि "मजिस्ट्रेट द्वारा दिया गया आदेश कानून के अनुरूप नहीं था और यह आदेश अनावश्यक पुनः जांच का कारण बनता।"

दिल्ली दंगों का मामला 2020 की उन घटनाओं से जुड़ा है जब नागरिकता संशोधन कानून (CAA) को लेकर उत्तर-पूर्वी दिल्ली के कई इलाकों में हिंसा भड़क उठी थी। इसमें 50 से अधिक लोगों की मौत हुई थी और सैकड़ों घायल हुए थे। इस दौरान कई राजनीतिक हस्तियों पर भड़काऊ भाषण देने और भीड़ को उकसाने के आरोप लगे थे, जिनमें कपिल मिश्रा का नाम भी सामने आया था। हालांकि दिल्ली पुलिस ने अपनी जांच में मिश्रा की भूमिका को किसी आपराधिक साजिश से नहीं जोड़ा था। राउज़ एवेन्यू कोर्ट के इस फैसले के बाद अब कपिल मिश्रा को दंगा मामले में एक बड़ी कानूनी राहत मिली है। कोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बिना नए सबूत या ठोस आधार के किसी व्यक्ति के खिलाफ बार-बार जांच के आदेश देना न्यायिक प्रक्रिया की भावना के विपरीत है। अदालत ने कहा कि ट्रायल कोर्ट को अब इस शिकायत पर "कानून के मुताबिक आगे की प्रक्रिया" अपनानी होगी, लेकिन फिलहाल कपिल मिश्रा के खिलाफ किसी प्रकार की जांच की आवश्यकता नहीं है।

इस आदेश के साथ ही दिल्ली दंगा केस में एक अहम अध्याय बंद हो गया है, जबकि राजनीतिक गलियारों में इसे भाजपा के लिए एक बड़ी नैतिक जीत माना जा रहा है।

सोना वायदा में 2141 रुपये और चांदी वायदा में 4607 रुपये का ऊछालः क्रूड ऑयल वायदा 26 रुपये बढ़ा

कमोडिटी वायदाओं में 32801.24 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 128210.53 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 27667.75 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 29021 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 161015.78 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 32801.24 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 128210.53 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का नवंबर वायदा 29021 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1980.02 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 27667.75 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना दिसंबर वायदा 121768 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123343 रुपये और नीचे में 121768 रुपये पर पहुंचकर, 121067 रुपये के पिछले बंद के सामने 2141 रुपये या 1.77 फीसदी की तेजी के संग 123208 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी नवंबर वायदा 1306 रुपये या 1.33 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 99199 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल नवंबर वायदा 175 रुपये या 1.43 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 12420 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी दिसंबर वायदा 121799 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123255 रुपये और नीचे में 121799 रुपये पर पहुंचकर, 2051 रुपये या 1.69 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 123107 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन नवंबर वायदा प्रति

10 ग्राम 122000 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 123414 रुपये और नीचे में 122000 रुपये पर पहुंचकर, 121266 रुपये के पिछले बंद के सामने 1991 रुपये या 1.64 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 123257 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 149540 रुपये के भाव पर खूलकर, 152680 रुपये के दिन के उच्च और 149540 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 147728 रुपये के पिछले बंद के सामने 4607 रुपये या 3.12 फीसदी की तेजी के संग 152335 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी नवंबर वायदा 3836 रुपये या 2.57 फीसदी की बढ़त के साथ 153051 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो नवंबर वायदा 3824 रुपये या 2.56 फीसदी की बढ़त के साथ 153021 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

मेटल वर्ग में 1601.40 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा नवंबर वायदा 8.8 रुपये या 0.88 फीसदी की तेजी के संग 1009.1 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता नवंबर वायदा 3.15 रुपये या 1.04 फीसदी की मजबूती के साथ 305.2 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम नवंबर वायदा 1.65 रुपये या 0.61 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 274.15 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा नवंबर वायदा 75 पैसे या 0.41 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 184.25 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 3527.04 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 5265 रुपये के भाव पर खूलकर, 5370 रुपये के दिन के उच्च और 5265 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 26 रुपये या 0.49 फीसदी की तेजी के संग 5321 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी नवंबर वायदा 25 रुपये या 0.47 फीसदी की तेजी के संग 5324 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 390.1 रुपये के भाव पर खूलकर, 399.9 रुपये के दिन के उच्च और 390 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 385.8 रुपये के पिछले बंद के सामने 11.9 रुपये या 3.08 फीसदी की तेजी के संग 397.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी नवंबर वायदा 11.7 रुपये या 3.03 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 397.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल नवंबर वायदा 923.5 रुपये पर खूलकर, 2.2 रुपये या 0.24 फीसदी घटकर 922 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 15835.48 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 11832.27 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1230.34 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 105.39 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 13.66 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 251.29 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 783.57 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2729.83 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 3.91 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.06 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 16424 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 56763 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 20953 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 289601 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 28968 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 25956 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 47557 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 142386 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17215 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 33756 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स नवंबर वायदा सत्र के आरंभ में 28661 पॉइंट पर खूलकर, 29047 के उच्च और 28661 के नीचले स्तर को छूकर, 530 पॉइंट बढ़कर 29021 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल नवंबर 5400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 4.9 रुपये की बढ़त के साथ 69.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस नवंबर 400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.6 रुपये की बढ़त के साथ 17.5 रुपये हुआ।